❀ श्रीहरिः ❀

॥ श्री मिसरी भागवत ॥

परिचय-

मिसरी मुख मीठौ करत, हरत ताप रस देत।
मिसरी मिस सर प्रेम के, हंस देत संकेत॥

प्रकाशक एवम् लेखक—

पं० सबलकिशोर पाठक, चतुर्वेदी।

व्यवस्थापक—

श्रीवल्लभ पुष्टि पाठशाला,

प्रयाग घाट–मथुरा।

प्रथम बार १००० | सन १९५३ | मूल्य केवल पाठ

❀ श्रीहरिः ❀

श्रीभागवत प्रतिपद मणिवर भावांशु भूषिता मूर्तिः ।
श्रीवल्लभाभिधान स्तनोतु निजदास्यसौभाग्यम् ॥

आदरणीय श्रीभागवत रस पिपासातूर सज्जन भक्त वृन्द !

अमन्दानन्द नन्दनन्दन की अविकम्प अनुकम्पा से तथ अनवरत भागवत पारायण परायण प्रणम्य चरण पिता श्री 'विदुर जी पाठक की वत्सल्यमयी आज्ञा से कई वर्ष पूर्व प्रस्तुत हुई यह— भागवत—संक्षिप्त विषय परिचायिका पद्यमयी–पुस्तिका आज आ लोगों के सम्मुख उपस्थित होती है। यद्यपि श्री मद्भागवत के लोक- प्रियत्व मूलक प्रचार प्राचुर्य से इस प्रकार की पुस्तिकाओं का अभाव नहीं, तथापि मेरे बाल सखित्व भाजन पं० श्री मथुरानाथ जी ककोर ने इसे अविलम्ब कण्ठावलम्बन देकर जिन विज्ञ महानुभावों के कर्ण द्वार से हृदयागार में प्रविष्ट की। उन्हीं में से मेरे परिचित कई सज्जनों के आग्रह से तथा 'तद्वाग्विसर्गोजनताघविप्लव:' के अनुसार इस बहाने से भी जनता का कुछ कल्याण हो, इस दृष्टि से अपनी धर्म पत्नी श्री 'मिसरी देवी' की पुण्य स्मृति में प्रकाशित की है। इस पुस्तिका के पाठ करने से अल्प समय में ही श्रीभागवतोक्त सम्पूर्ण भगवल्लीला ओं के विशेषकर निरोध प्रकरण दशमस्कन्धोक्त लीलाओं के श्रवण कीर्त्तन से लाभान्वित होंगे ऐसी आशा करता हूँ। और वृन्दावन निवासी भागवत व्यसनी ब्रह्मचारी श्रीकृष्णदासजी की इस पुस्तिका के प्रकाशन व्यय के दान की उदारता की प्रशंसा करता उनकी श्री हरिप्रिया चरणों में रति की कामना करता हूँ और इस कृति को प्रभु चरणों में सौंप देता हूँ।

निवेदक—
सबलकिशोर पाठक, चतुर्वेदी.

व्यवस्थापक—श्रीवल्लभ पुष्टि पाठशाला,
पुस्तकालय प्रयागघाट–मथुरा।

गोपिका विरहाविष्ट कृता

❀ श्रीराधा प्रार्थना ❀

श्री राधे प्रियतम दृक् सङ्गम सञ्जात हास दृक्सलिलैः ।
भवदीयैः स्नानं मे भूयात्सततं न पाथोभिः ॥ १ ॥

हे श्रीराधे ! जब आपके प्रियतम श्यामसुन्दर के नयनों से नयन मिलते हैं उस समय आप हँसती हैं, फिर भी आपका प्रेम हृदय में नहीं समाता, पानी बन कर नयनों से बहने लगता है। मैं दूसरे पानी से न न्हाकर उसी पानी से स्नान करूँ । ऐसी इच्छा है ।

भूयान्मेऽभ्यवहार स्तावक ताम्बूल चर्वितेनैव ।
पानं करुणाकूतस्मितावलोकामृतेनैव ॥ २ ॥

हे श्रीराधे ! मैं और कुछ न खाऊँ । आप जो अपने मनमोहन मदनमोहन के मोहने को पान का बीड़ा आरोगती हैं और अनेक रस-रीति के मनोरथों को करती उस बीड़े को चाबती हैं। बस उसी आपके चाबे हुए बीड़े से पेट भरलूँ ।

हे श्रीराधे ! मैं अपनी प्यास बुझाऊँ । पर पानी से नहीं, किन्तु आपकी दया भरी, भाव भरी, मन्द मुसक्यान भरी, चितवन के अमृत से ।

त्रिषवणमिहभव दङ्घ्रि प्रणतिः सन्ध्या प्रकृष्ट दैन्येन ।
जापस्तु तापक्लेशै विगाढ भावेन कीर्तनं नाम्नाम् ॥३॥

हे मानमये ! आपके प्राणाधिक प्यारे की ओर से आपकी मनुहार करने को यहाँ संकेत निकुंज में मैं अत्यन्त दीनता से आपके श्री चरणों में प्रणाम करूँ । बस वह प्रणाम करना ही मेरे लिये त्रैकालिक यज्ञांग स्नान सिद्ध हो । और उस दीनता से ही मेरा आवश्यक नित्य कर्म सन्ध्या वन्दन सम्पन्न हो । जाप तो तब

उन्हीं आपके नामों का कीर्तन होगा, जिनका उच्चारण वो विरह व्यथित वल्लभ प्रति क्षण ताप और क्लेशों से उत्कट भाव के द्वारा किया करते हैं।

अस्तं गच्छत्सूर्यांशुशुक्षणौ दिवस दुःख होमोऽस्तु ।
त्वत्पृष्ट प्रियवार्ता कथनं मे ब्रह्म यज्ञोऽस्तु ॥ ४ ॥

हे स्वामिनि ! दिन में आप दोनों के परस्पर में न मिलने के कारण जो दुःख होता है, उसकी समाप्ति सूर्य्य के अस्त होने पर तो होनी ही चाहिये, इस लिये अस्ताचल को जाते हुए सूर्य रूपी अग्नि में दिन के दुःखों का होम हो।

हे कृष्ण प्रिये ! आप प्रसन्न होकर अपने प्राणवल्लभ की वार्ता मुझसे पूछें और मैं कहूँ बस यही मेरा ब्रह्म यज्ञ हो।

भवतीनां प्रियसङ्गम सञ्जातमनोमहोत्सवेक्षणतः ।
तर्पण मिह सर्वेन्द्रियतृप्तिर्भवतान्मनोरथाप्त्या मे ॥५॥

हे रसेश्वरि ! मेरा यह ही मनोरथ है कि आपके मनमें अपने प्यारे के साथ मिलने पर जो असीम आनन्द हो उसका मैं दर्शन करूँ, बस इसी से मेरी सर्व इन्द्रियां तृप्त होंगी, जिससे देवादि तर्पण भी अनायास ही सिद्ध होगा।

इत्थं जीवन मस्तु क्षणमपि भवदङ्घ्रि विप्रयोगेतु ।
मरणं भवता देवं भावे शरणं त्वमेव भव ॥ ६ ॥

हे शरण्ये। मेरा जीवन आपकी इस प्रकार की रस-लीलाओं की भावना से सिद्ध हुए भाव का अनुभावक हो। एक क्षण भी आपके चरणों का वियोग न हो। यदि वियोग हो तो तत्काल ही मेरा मरण भी हो। इस प्रकार के भाव के होने के विषय में आप ही शरण होवें।

———

❀ श्रीहरिः ❀

श्री मिसरी भागवत



प्रथम मङ्गलाचरण व्यास जू आप कह्यौ है ।
तदनु[1] सूत अरु शौनकादि संवाद ठयौ है ॥ १ ॥
अवतारन के भेद, फेर सन्ताप व्यास कौ ।
निजी लाभ के प्रश्न, उतर नारद सुहास कौ ॥ २ ॥
वासुदेव की भक्ति भरी भाषा समाध[2] की ।
व्यास प्रकाशित करी पुत्र शुक पढ़ी स्वाद की ॥ ३ ॥
पृथा[3] गङ्गसुत[4] उभयकृत[5] वासुदेव गुणगान ।
जन्म परीक्षित कौ तथा विदुर आगमन जान ॥ ४ ॥
सुन्यो नाश यदुवंश कौ अर्जुन की अकुलान ।
दियोराज्य नृप पौत्र कों कियौ महा प्रस्थान ॥ ५ ॥
धर्म धरणि संवाद, कलियुग कों नृप ललकार ।
निर्भय कीयौ धर्म कों धरणी कौ सतकार ॥ ६ ॥

१—उसके बाद २-समाधि भाषा-श्री मद्भागवत ३-कुन्ती ४-भीष्म ५-दोनों का किया हुवा ।

तहाँ प्रबल भावी विवश शृङ्गी ऋषि कौ शाप ।
छोड़ सबै घर घरनि[७] सुत भये गंग तट आप ॥ ७ ॥
श्रीशुककौ शुभ आगमन, प्रश्न परीक्षित कीन ।
कहा आचरैं पुण्य जे काल दण्ड भय दीन ॥ ८ ॥

॥ इति श्रीमद्भागवत प्रथमस्कन्ध संक्षिप्त विषय परिचायिका ॥

सुनकर राजा की गिरा बोले श्री शुकदेव ।
धन्य नृपति तो सुमति कौं सर्वलोक हित टेव[१] ॥ १ ॥
स्थूल सूक्ष्म ब्रह्माण्ड सबै वैराज[२] पुरुषगत ।
योग धारणा[३] त्क्रांति[४] सद्यक्रम मुक्ति सकल सत ॥ २ ॥
पुन नारद अरु अब्जयोनि[५] कौ बाद परस्पर ।
अवतारन के भेद, विधि[६] तपश्चरण[७] जलज[८] पर ॥ ३ ॥
विविधि प्रश्न पुन कीन नृप कृष्ण कथारस मत्त ।
श्री भागवत रूपतें उत्तर शुक मुनिदत्त ॥ ४ ॥
दर्शन लोक वैकुण्ठ कौ दयौ स्वभू[९] कौं सत्त्व[१०] ।
चतुश्लोक की भागवत समझायौ सब तत्त्व ॥ ५ ॥

७-गृहणी स्त्री, ८-राजा परीक्षित ।

१-आदत (स्वभाव) २-विराट् भगवान् ३-योग धारणा ४-उत्क्रान्ति ५-ब्रह्मा ६- ब्रह्मा ७-तपस्या ८—कमल ९—ब्रह्मा १०—धैर्य ।

कृष्ण कौ ध्यान धर चही है सर्व पर ।
द्वितीयस्कन्ध कों कह्यौ संक्षिप्तकर ॥ ६ ॥

॥ इति श्रीमद्भागवत द्वितीयस्कन्ध संक्षिप्त विषय परिचायिका ॥

कथा तीसरे स्कन्ध की बरनों मति अनुसार ।
दुर्योधन के दुर्वचन[1], तजौ विदुर आगार[2] ॥ १ ॥
तबै बिदुर उद्धव मिले यमुन तट पास में ।
कृष्ण चरित्त संक्षेप बखानों तास[3] में ॥ २ ॥
मित्रासुत[4] सों भेट विदुर की गंगद्धार में ।
तत्त्वज्ञान के प्रश्न सृष्टि के शुभ विचार में ॥ ३ ॥
ब्रह्मा की शुभ सृष्टि में भये प्रकट वाराह ।
हिरण्याक्ष कों मार कें धरणी धर[5] गही राह[6] ॥ ४ ॥
कर्दम ऋषि सन देव हूति कौ कह्यौ विवाहा ।
कपिल भये शुभ पूत[7] मात के संशय दाहा ॥ ५ ॥
तहाँ भक्ति के भेद ज्ञान वैराग्य जीव गति ।
परौ गर्भ के गर्त विवश वरनी हरिपदरति ॥ ६ ॥

॥ इति श्रीमद्भागवत तृतीय स्कन्ध संक्षिप्त विषय परिचायिका ॥

१—कुवाक्य (गाली) २—घर ३—उस समय ४—मैत्रेय ऋषि ५—पृथिवी को स्थापित कर ६—पधार गये (रास्ता पकड़ा) ७—पुत्र ।

कवित्त

चौथे में मनु के सुता औ सुतन कौ वंश-
दक्ष के जु यज्ञ कौ विनाश विस्तारौ है॥ १ ॥
ध्रुव के समान आन[1] सुन्यौ है सुजान कौन-
मस्तक चढ़ कालके विमान पग धारौ है॥ २ ॥
प्रथु कौ चरित्र सो तो परम पवित्र जान-
प्राचेतसरुद्रगीत[2] गहन अपारौ है॥ ३ ॥
प्राचीन[3] बर्ही पुरञ्जन की कथा बीच-
नारद तें आत्मा कौ रहस विचारौ है॥ ४ ॥
रुद्रगीत जपशक्ति तें भये प्रचेता धन्य।
पुन नारद सत्संग वश तिनकी मती अनन्य॥ ५ ॥

॥ इति श्रीमद्भागवत चतुर्थ स्कन्ध संक्षिप्त विषय परिचायिका ॥

प्रियव्रत, आग्नीध्र, नाभि, अरु ऋषभ, भरत कौ।
कह्यौ चरित विस्तार रहूगण सुजड़ भरत कौ॥ १ ॥
गूढ़ ज्ञान के भेद मृषा[1] संसार बखानौ।
भवाटवी[2] के बीच कुटुंब कौ तस्कर[3] मानौ॥ २ ॥

१—अन्य (दूसरा) २—प्राचीनबर्ही राजा के पुत्र प्रचेताओं को शिवजी का उपदेश ३—एक राजा।

१—मिथ्या २—संसार रूपी वन ३—लुटेरा

भरत खण्ड, भूगोल, द्वीप कौ वर्णन संग्रह ।
नदी सिंधु गिरि भेद चन्द्र आदिक सबही ग्रह ॥ ३ ॥
रवि मण्डल आकाश विष्णुपद शेष लोक कौ ।
अरु शिशुमार विचित्र राहुगति नरक शोक कौ ॥ ४ ॥
वर्णन कियौ विस्तार स्कंध पञ्चम के माहीं ।
पर्वत लोकालोक सबै कछु बाकी नाहीं ॥ ५ ॥

इति श्रीमद्भागवत पञ्चमस्कन्ध संक्षिप्त विषय परिचायिका

छठे अजामिल तरौ नाम नारायण लैकें[१] ।
इन्द्र कियौ अपमान गुरू कौ सम्पत पैकें ॥ १ ॥
शुक्र नीति बल असुर राज्य देवन सों छीनों ।
विश्व रूपने कवच नरायन[२] इन्द्रहि दीनों ॥ २ ॥
ऋषि दधीचि की अस्थि[३] तें बज्र पुरंदर[४] कीन ।
ब्रत्रासुर कों मारकें राज्य लियौ निज छीन ॥ ३ ॥
ब्रत्रासुर के कृष्ण-भक्त ह्वैवे कौ कारण ।
चित्र केतु की कथा नारदी[५] विद्या धारण ॥ ४ ॥
दिति सेवित कश्यप कह्यौ व्रत विस्तृत विधि पुंसवन ।
कछुक नियम की टूटतें उनञ्चास भे मरुत गन ॥

❀ इति श्रीमद्भागवत षष्ठस्कन्ध संक्षिप्त विषय परिचायिका ❀

१—प्राप्त करके २—नारायण कवच ३—हड्डी ४—इन्द्र ५—नारद ऋषि से उपदिष्ट विद्या ।

कवित्त

सप्तम युधिष्ठिर अरु नारद संवाद बीच-
नरहरि[१] अवतार प्रहलाद हेत धारौ है ॥ १ ॥
विधि[२] के प्रसाद[३] हिरनाकुश गुमान भरौ-
सुत प्रहलाद हरि भक्त संग रारौ[४] है ॥ २ ॥
भक्त द्रोह कीयौ ताकौ शीघ्र फल दीयौ नाथ-
अति ही प्रकोप ताहि पेट चीर मारौ है ॥ ३ ॥
पाछैं त्रिपुरासुर कौ दाह कियौ शङ्कर ने-
अरु आश्रम वर्ण धर्म गहन विचारौ है ॥ ४ ॥

❀ इति श्रीमद्भागवत सप्तम स्कन्ध संक्षिप्त विषय परिचायिका ❀

अष्टम में चौदह मनु तारे गज ग्राह युद्ध-
स्तुति के किये ते गज ग्राह तें छुटायौ है ॥१॥
मन्दर धर[१] कच्छप पयोधि मथ[२] मोहनि[३] ह्वै-
सुरन पिवाई सुधा असुरन भुलायौ है ॥ २ ॥
अजित भे देव महादेव नील कण्ठ[४] मोहे--

१-नृसिंह २-ब्रह्मा ३-प्रसन्नता (वर दान) ४-रार झगड़ा (द्वेष)

१-मन्दराचल के धारण करने को कच्छपरूप धारण करने वाले । २-क्षीर सागर का मथन करने वाले ।३-मोहनीरूप धारणकर ४-इसी प्रसंग में ही शिवजी विषपान करने से नीलकण्ठहुये हैं ।

उमा के समीप रूप रमनी[५] दिखायौ है ॥ ३ ॥
शुक्रजू की सेवा कर स्वर्ग राज्य पायौ बलि-
धरौ रूप वामन राज्य इन्द्रहि दिवायौ है ॥४॥

-ः सोरठा ः-

धरौ मत्स्य कौ रूप, सत्यव्रत नृप परिचरे[६] ।
लह्यौ ज्ञान बहु भूप, प्रलय पयोनिधि नाव पर ॥ १ ॥

❀ इति श्रीमद्भागवत अष्टम स्कन्ध संक्षिप्त विषय परिचायिका ❀

नवम बंश रवि[१]कौ प्रथम वर्णन कियौ विचित्र ।
अम्बरीष नृप भक्तकी तामें कथा पवित्र ॥ १ ॥
मान्धाता, हरिचंद, सगर, सौदास, निमीकौ ।
वरनौ चरित प्रसंग संग सौभरी मुनी कौ ॥ २ ॥
भागीरथ शर्याति आदि की कथा सुहायी ।
दशरथ सुत परब्रह्म राम गाथा सुखदायी ॥ ३ ॥
ऐल, सहस्रावाहु, क्षत्रवृद्धादि ययाती ।
चंद्र बंश में प्रथित नृपन की कथा सुहाती ॥४॥
परशुराम अवतार, देवयानी शर्मिष्ठा ।
नृप ययाति संग ब्याह वृषा[२] की गुरु पद निष्ठा ॥५॥

५-सुन्दर स्त्री । ६-सेवा की ।

१-सूर्य । २-वृष पर्वा राजा ।

पुरुवंशी, दुष्यंत, भरत, रन्ती[३] के गाये ।
सुयश दयाके ढरे चरित बुधजन मन भाये ।। ६ ।।
कुरुवंशी, शन्तनू, भीष्म, धृतराष्ट्र, सुयोधन ।
पाण्डु तनय नय निपुन युधिष्ठिर भीम जु अर्जुन ।।७।।
देव अंश पांचौ प्रकट नकुल तथा सहदेव ।
व्यास चलायौ वंश यह जिनके सुत शुकदेव ।। ८ ।।
बंदौं श्री शुकदेव भागवत रसके दाता ।
जिहि प्रसाद भव-सिंधु मगन नर मुक्ती पाता ।। ९ ।।
चंद्रवंश के बीच सु यदुकुल प्रकटे पूर्णानन्द[४] ।
भक्त हितैषी सर्ब[५] पर निज लीला स्वच्छंद[६] ।। १० ।।

* इति श्रीमद्भागवत नवम स्कन्ध संक्षिप्त विषय परिचायिका *

दशम परीक्षित नृपति की कृष्ण कथा में प्रीति ।
दरसाई अति भक्तिसौं सुंदर सहज सुरीति ।। १ ।।
सुंदर सहज सुरीति प्रीति युत प्रश्न किये जब ।
व्यास[१] तनय भगवान् देव शुक कहन लगे तब ।। २ ।।
विकल मही खल भारतें गई विधाता[२] पास ।
धेनु रूपकौं धारके सकल कह्यौ निज त्रास[३] ।। ३ ।।

३-रन्तिदेव राजा । ४-श्रीकृष्ण । ५-क्षर, अक्षर से पर पुरुषोत्तम । ६-स्वरूपात्मक लीला में स्वतन्त्र ।
१-व्यास पुत्र । २ ब्रह्मा । ३—कष्ट ।

ब्रह्मा देवन के सहित लिये त्रिलोचन[४] साथ।
क्षीर[५] जलधि तट जायकें गुण गाये जन[६] नाथ ॥ ४ ॥
सुनी समाधी में गिरा समझाये सब देव।
प्रकटेंगे परिकर सहित बासुदेव बलदेव ॥ ५ ॥
चंद्र वंश यदु वंश में भये बसुदेव सुजान।
उग्रसेन सुत कंस की भगिनि[७] देवकी जान ॥ ६ ॥
ब्याह भयौ दंपति[८] चले चढ़[९] स्यंदन जब साथ।
तबै कंसने अश्वकी गही रज्जु[१०] निज हाथ ॥ ७ ॥
स्वयं सारथी भयौ प्रीति हिय माहि अमानी।
गर्भ आठवे सुनी मृत्यु आकाशी बानी ॥ ८ ॥
भगिनी मारन लग्यौ कंस वसुदेव प्रबोध्यौ[११]।
नारद वचन प्रमान करागृह[१२] दंपति[१३] सोध्यौ[१४] ॥ ९ ॥
छै बालक मारे अधम[१५] मृत्यु भीति[१६] तें कंस।
सप्तम श्री बलदेव जू भये शेष के अंस ॥१०॥

---

४ शिव। ५-क्षीर सागर। ६-भगवान्। ७-बहिन। ८-स्त्री पुरुष (देवकी वसुदेव) ९-रथ। १०-घोड़ों की लगाम। ११-समझाया। १२-कैदखाना। १३-देवकी वसुदेव। १४-दण्ड दिया। १५-नीच। १६-मरने के डर से।

अष्टम हरिके गर्भ की ब्रह्मादिक सुर नुति[1] करत ।
समझावत भये देवकी सकल काज याते सरत ॥११॥
मात पिता कृत स्तुती गौन[2] गोकुल प्रति भयते ।
नंद सुता कों लाय आय गये उचित समय ते ॥१२॥
सुनी कंस नें पुत्रिका[3] प्रकटी है यह बात ।
दौर छीन मारन लग्यौ गई गगन[4] दै लात ॥१३॥
तव[5] मारक प्रकट्यौ कहूँ सुन घबरायौ कंस ।
दुर्मंत्रिन[6] की मंत्रणा[7] नाशौ ब्रज शिशु बंस ॥१४॥
नंदालय[8] में पुत्र जन्म कौ उत्सव भारी ।
गोप गोपिका सबै मुदित मन जावैं वारी[9] ॥१५॥
जात कर्म संस्कार नंदजू कियौ सुतन कौ ।
कर[10] कर[11] लैकर[12] गये बहुर मथुरा पत्तन[13] कौ ॥१६॥
मिले मित्र बसुदेव ते नंदराय सुख मान ।
तुरत लौट गोकुल गये उत्पातन कों जान ॥१७॥
बाल घातिनी पूतना कालकूट[14] कुच पान ।
कियौ कृष्णने ताहि सँग हरे प्रान गति दान ॥१८॥

१-स्तुति । २-गमन । ३-लड़की । ४-आकाश । ५—तेरा मारने वाला । ६—दुष्ट सलाहकार । ७-सलाह । ८-नन्द भवन । —बलिहारी । १०-हाथ । ११-टैक्स । १२-साथ में लेकर । १३—नगर । १४-विष ।

शकटा सुर कों भग्न[१५] कर तृणावर्त्त कों मार ।
गर्ग मुनी जू नें कह्यौ नाम रूप नहीं पार ॥१९॥
ब्रज रज मुख में दई सुनी जब मात यशोधा[१] ।
धमकाये गहि कृष्ण अरे अति निपट अबोधा ॥२०॥
मैं माटी खाई नहीं कहि श्रीमुख दियौ फार ।
विश्व रूप तामें लख्यौ घबराई नँद नार ॥२१॥
पय उफन्यौ तज लालकों माय समारौ जाय ।
खिसयाने दधि मथनियाँ फोर भजे हरि राय ॥२२॥
पकर कृष्ण कों मायनें ऊखल बांधे दाम[२] ।
यमलार्जुन तरु तोर के दामोदर छवि धाम ॥२३॥
वृंदावन सँग सखन के खेलत वत्स बकारि[३] ।
मारौ मुखमें पैंठ कें अघ अजगर तनु धारि ॥२४॥
छाक अरोगत प्रीति सों सखावृंद के मांहि ।
ब्रह्मा चोरे वच्छ सखन कों तटपै पायौ नांहि ॥२५॥
भये स्वयं बहु रूप बाल वच्छा बपु धारी ।
तैंसे ही वेष बनाय भेद नहीं लख्यौ अनारी[४] ॥२६॥
ब्रह्माकीनीस्तुती कृष्णकी मोह विगत अति चकितभये ।
धेनुकको संहार कलिंदी कूल सविष[५] जल पान ठये ।२७

१५–तोड़ कर ।
१–यशोदा । २—रस्सी । ३—वत्सासुर बकासुर को मारने वाले । ४—मूर्ख । ५—विष युक्त ।

मृतकन जीवित किये यमुन हृद कूदे बनमाली ।
नृत्यकियौ अतिचित्र फणन पर विमद[६]कियौ काली॥२८

निकास्यौ हरि निर्भय करकें ।
गोप गोपिन के हिय फरकें[७] ॥ १ ॥

ग्रीष्म ऋतू में प्रवल प्रलम्बा सुर कौं दाऊ[८] ।
हन्यौ बहुर बन मुंज दवानल हरि ने खाऊ[९] ॥२९॥
वर्षाऋतु शोभित विपिन सखन संग खेलत हरी ।
गोपिन कृत हरिगान अरु वेणुनादकी शुभघरी ॥३०॥
चीर हरन पुन गमन यज्ञ प्रति ग्वालन नीकौ ।
अन्न याचना ब्याज अनुगृह ऋषि पतनी कौ ॥३१॥
इंद्र याग कौ भङ्ग, धरौ गोवर्धन कर पर[१] ।
गो ब्रज लियौ बचाय वृष्टि तें कृष्ण प्रकृति परं ॥३२॥
चकित भये ब्रज लोग नंद समझाये तब ही ।
गर्गवचन अनुसार विगत संशय[२] भये सब ही[३] ॥३३॥
काम धेनु अरु इंद्र ने कियौ अभिषेक अरम्भ ।
स्नान कुबेरे[४] नंदजू हरे वरुण अवलम्ब[५] ॥३४॥

६-मदहीन । ७-उत्साहित होवें । ८-श्रीदाऊजी बलदेवजी । ९-भक्षण किया ।

१-परमात्मा । २—संदेह रहित । ३—गुरू । ४-कुसमय । ५—वरुण का आश्रित दूत ।

गये वरुण के धाम हरि सरमायौ हिय मांहि।
चरणगहे स्तुति कर कह्यौ मैं जानत कछु नांहि ॥३५॥

पधारे नंद भवन कूँ कान।
लाल की फेर भई पहिचान ॥१॥

शरद चांदनी रात सुनी जब बंशी हरि की।
तज सब घरके काज गोपिका पहुंची फरिकी[६] ॥३६॥
तजी लोक कुलकान नहीं कछु चिंता घर की।
हियलागी लगि लाग[७] लला मोहन गिरिधर की ॥३७॥
दौर गईं हरि पास, नहीं कछु ध्यान बसन[८] कौ।
धन्य गोपिका प्रीति सु भूषन आनहि तन कौ ॥३८॥
स्वागत कर हरिनें कह्यौ लौटजाउ निज धाम।
अर्धरात्र गहवर[९] बिपिन[१०] नहीं रहि सकें वाम[११] ॥३९॥
गोपिन जिय घबराय तब कही सुनौ घनश्याम।
हम आईं तव चरण तल नहीं धाम सों काम ॥४०॥
जान तबै श्री कृष्ण ने तिनकी प्रीति अनन्य।
रच्यौ रास मंडल विपुल भईं गोपिका धन्य ॥४१॥
रास करत लख मान हरि भये जु अंतर्धान।
अति घबरानी गोपिका वृच्छन सों बतरान ॥४२॥

६—उत्साहित। ७—लालसा। ८—वस्त्र। ९—गहन।
१०—वन। ११—स्त्री।

(तदात्मता) यह सहज भाव संचारि विरहकौ ।
ज्ञान मार्गी ! लखौ तत्त्व हरि लीला रहकौ[1] ॥४३॥
हरि लीला अनुकरन गोपिका गीत निहारौ ।
भेद अभेद, अभेद भेद, के भेद बिचारौ ॥४४॥
नहीं विकलता सहि सकें गोप तियन की शौर ।
पीत बसन मन्मथ मथन हरि प्रकटे ता ठौर ॥४५॥
महारास रस की भरी क्रीडा परम पवित्र ।
श्रवन करत ही काम कौ नाश होय नहि[2] चित्र ॥३६॥
विद्याधर के शाप तें अजगर कीयौ मुक्त ।
नंदराय रक्षा करी शङ्खचूड वध युक्त ॥ ४७ ॥
युगल गीत वध वृषभ कौ नारद कंस मिलाप ।
भेजौ दानव केशिया कंस कियौ परलाप ॥४८॥
सहज रीति वध केशि कौ, नारद ने स्तुति कीन ।
क्रीडा मध[3] बध व्योम कौ कियौ हरी ने चीन[4] ॥४६॥
कंस बोल अक्रूर जू भिजवाये व्रज मांहि ।
राम कृष्ण कों आनिये अवश छांड़िये नांहि ॥५०॥
मारग में अक्रूर जू जिय में करत विचार ।
भरे भक्ति आवेश रज ब्रज की मस्तक धार ॥५१॥
गोकुल मे अक्रूर कौ राम–कृष्ण सन्मान[5] ।

१—रहस्य । २—आश्चर्य नहीं । ३—मध्य । ४—पहिचान कर । ५—आदर ।

कियौ प्रीति सौं तब कह्यौ सब वृत्तान्त बखान ॥५२॥
हरि जू मथुरा चले गोपिका भईं अधीरा[1]।
क्रूर[2] अरे अक्रूर नहीं जानत पर पीरा[3]॥५३॥
कालिंदी के मध्य अक्रूरहि दर्शन दीनौ।
ब्रह्म रूपकौं जान हरी गुण वर्णन कीनौ॥५४॥
दुर्मद धोबी हन्यौ पैठ[4] मथुरा के मांही।
दर्जी माली दुहू भक्त राखे गहि बांही॥५५॥
मथुरा मारग कूबरी सरल सुन्दरी कीन।
धनुषभङ्ग, बध कुवलियीपीड़ दंत कौं छीन॥५६॥
रङ्ग-भूमि में कर प्रवेश चाणूरहि मारौ।
शल तोशल अरु मल्ल मुष्टिका कौं संहारौ॥५७॥
ममा कंस कौं मार सान्त्वना तातहि दीनी।
उग्रसेन अभिषेक, गुरू सौं विद्या लीनी॥५८॥
मृत गुरु पुत्रन आन दक्षिणा गुरु कौं दीनी।
उद्धव जू कौं भेज सान्त्वना गोकुल कीनी॥६६॥
गोपिन कौं समझाय स्वयं समझे तब उद्धव।
ज्ञान और वैराग्य प्रीति लतिका[5] के पल्लव[6]॥६०॥
पल्लव लतिका बसें लसें लहरावैं।

१-धैर्य हीन। २—कसाई। ३—कष्ट। ४—प्रवेश कर। ५—लता। ६—दस्ते।

होत लता तें दूर तुरत मुरझावैं ॥ ६१ ॥
तैसें ही भक्ति विहीन विरति[1] विज्ञाना।
पावें नहिं छवि यही तत्त्व तब जाना ॥६२॥
मथुरा लौटे आय दशा गोकुल की बरनी।
कुब्जा इच्छा करी पूर्ण हरि नें सुख करनी ॥६३॥
अक्रूरहि समझाय हस्तिनापुरहिं पठायौ।
कौरव पाण्डव रूढ[2] बैर समझौ समझायौ ॥६४॥

इति श्रीमद्भागवत दशमस्कन्ध पूर्वार्ध संक्षिप्त विषय परिचायिका।

अस्ति, प्राप्ति, द्वै कंसरजा की जो पटरानी।
पिता जरासँध पास गयीं पति–बध अकुलानी ॥ १ ॥
हमकों विधवा करी कृष्ण, यों कह्यौ पिता ते।
सुन जिय भयौ विषाद जरौ चिताग्नि[3] चिता ते ॥ २ ॥
कृष्ण तबै छविचारु रचाई पुरी द्वारका।
मध्य सिंधु के स्वर्ण-मयी जनचित्तहारका ॥ ३ ॥
सत्रह बेर हराय ताहि हारे एक बेला।
कालयवन मुचकुन्द दृष्टि जारौ कर खेला ॥ ४ ॥
भीष्म नृपति की पुत्रि रुक्मणी भेजी पाती।
अवश बरोंगो ताहि विप्र मेरे मन भाती ॥ ५ ॥
हरी हरीनें जाय रुक्मणी राच्छस विधि तें।

१–वैराग्य। २–दृढ़ जमा हुवा। ३–चिंतारूपी अग्निकी चिता से।

देवि यात्रा मांहि सबै नृप हारे निधि[1] तें ॥ ६ ॥
रुक्मी कौ मद भङ्ग, जन्म प्रद्युम्न तनय[2] कौ ।
शंवर नें हरलियौ ताहि अवलंव[3] अनय[4] कौ ॥ ७ ॥
दैव गती अति चित्र हन्यौ प्रद्युम्न शंवरहिं ।
मायावति रति साथ गृहागम[5] मार्ग अंबरहि[6] ॥ ८ ॥
सत्राजित के मृषाशाप[7] नाशन के कारण ।
जाम्बवती कौ कियौ हरी ने पाणी धारण ॥ ९ ॥
शतधन्वा कौं मार सत्यभामा, कालिंदा, ।
सत्या, भद्रा, तथा लक्ष्मणा, अरु मित्र विन्दा ॥१०॥
कर इनके पाणिग्रहण नरकासुर कौं मार ।
घर ताके अवरुद्ध[8] बिवाहीं कन्या सोल हजार ॥११॥
रुक्मणि सँग परिहास, व्याह अनिरुद्ध, रुक्म बध।
ऊषागृह अनिरुद्ध रोध[9], अरु बाणासुर मृध[10] ॥१२॥
माहेश्वर ज्वर स्तोत्र, नृगनृपति सरट[11] यौन कौ ।
हरि कीनौ उद्धार, जु कर्षण यमुन भौन[12] कौ ॥१३॥

१-श्री द्वारकाधीश । २-पुत्र । ३—आश्रय । ४—अन्याय । ५—घर आना । ६—आकाश । ७-झूँठा कलंक । ८-कैदकी हुई । ९—कैद करना । १० संग्राम । ११-करकेंटा । १२-यमुना के भवन हुए जल का ।

पौण्ड्र,सुदच्छिरा,द्विविदबध,कर्षण कौरव नगरकौ।
नारदकौ आश्चर्य, नित्य कृत्त कृष्ण सुघर कौ ॥१४॥
जरासन्ध अवरुद्ध राजदूतीय[2] समागम।
उद्धव संग सलाह इन्द्रप्रस्थ[3] प्रति हरि गम[4] ॥१५॥
राजसूय के याग जरासंध भीम लराई।
जरासंध की मृत्यु दये सब नृपति छुराई ॥१६॥
अग्रिम पूजा कृष्ण की हन्यौ चैद्य[5] तेहि काल।
अवमृथ कीनौ स्नान, अरु दुर्योधन मति चाल ॥१७॥
शाल्व, सौभ, दँतवक्र, विदूरथ कौ बध वरनौं।
सूत हनन, बल[6] तीर्थ यान बल्वल वध करनौं ॥१८॥
मित्र सुदामा रङ्क[7] कों कीयौ इन्द्र समान।
सूर्य राग के काल पुन कुरुक्षेत्र प्रस्थान ॥१९॥
नन्दादिक सँग मिलन गोपियन साथ प्रीतिसों।
हरि दीये समझाय सबैं हित नीति रीति सों ॥२०॥
द्रुपद सुता के साथ कृष्ण पत्नी संवादा।
नारद ऋषि वसुदेव यज्ञ उत्सव शुचि सादा ॥२१॥
मृत भ्रातन कौ आनयन[8] हरी सुभद्रा पार्थ[9]।

१—चतुर। २—जरासंध के कैदी राजाओं के दूत का आना। ३—दिल्ली। ४—गमन (जाना)। ५—शिशुपाल। ६—बलदेवजी की तीर्थ यात्रा। ७—दरिद्र। ८—लाना। ९—अर्जुन।

श्रीहरि कौं मिथिला गमन, वेद स्तुति सत्यार्थ ॥२२॥
धरौ वटू कौ रूप वृकासुर कौं छल मारौ ।
शंकर भोलानाथ कृष्ण कौ लह्यौ सहारौ ॥२३॥
विष्णु भक्ति तें सुगम गति कैवल्यादिक जान ।
सब देवन में श्रेष्ठ हरि भृगुजी कियौ बखान ॥२४॥
महाकाल पुर जाय विप्र पुत्रन कौं लाये ।
अर्जुन राखे प्राण समझ तब पाये ॥२५॥
श्रीहरि की शुचि मधुर सर्व गाथा कौ संग्रह ।
अमित यदू कौ वंश कियौ वर्णन नृप आग्रह ॥२६॥

इति श्रीमद्भागवत दशमस्कन्ध उत्तरार्ध संक्षिप्त विषय परिचायिका ।

एकादश बश मुनिन के शाप यादवन बंस ।
लोह मुसल प्रकटाय के कियौ कृष्ण ने ध्वंस ॥ १ ॥
नारद सँग वसुदेव के वाद मध्य संवाद ।
जनक राज-नव योगि कौ धर्म भागवत आद ॥ २ ॥
पुन उद्धव प्रति कृष्णनें कह्यौ ज्ञान कौ सत्त्व[1] ।
बीस चार अवधूत के गुरुन सिखायौ तत्त्व ॥ ३ ॥
भक्ति साधना मुक्ति की साध्य भक्ति सद्धर्म ।
सत्सङ्गति उपजै अमृत बंधक होइ न कर्म ॥ ४ ॥

१—निष्कर्ष (सार)

सनकादिक कौं ज्ञान हंस अवतार धर्यौ जब।
ध्यान, विभूती, सिद्धि, वर्ण, आश्रम, वरणौं सब ॥५॥
भिक्षु गीत औ ऐलके गीत कह्यौ वैराग।
वनी सर्व विधि जो भयो हरि सेवा अनुराग ॥ ६ ॥
यदुकुल कौ संहार कर वासुदेव बलदेव।
कियौ स्वपद आरोह[1] सुन तजे प्राण वसुदेव ॥ ७ ॥

॥ इति श्रीमद्भागवत एकादश स्कन्ध संक्षिप्त विषय परिचायिका ॥

द्वादश में कलि के नृपति काल दोष की खान।
भूमि गीति, कलि दोष कौं नाशक हरि गुणगान ॥१॥
कृष्ण तत्त्व उपदेश ते राज-भीति[2] कौ त्याग।
मुक्ति परीक्षित की कही, सर्पयाग श्रुति भाग[3] ॥ २ ॥
लक्षण नाम पुराण के मार्कण्डेय तप योग।
माया दर्शन, शिव कृपा जो नाशै भव रोग ॥ ३ ॥
विष्णु विभूती, सूर्य के द्वादश व्यूह पुरान।
उक्त अर्थ संक्षिप्त, पुनि संख्या, महिमा, दान ॥ ४ ॥
श्रीहरि कीनी प्रेरणा, आज्ञा पित ने दीन।
चौबे सबलकिशोर की मति उज्जल गुरु कीन ॥ ५ ॥

॥ इति श्रीमद्भागवत द्वादशस्कन्ध संक्षिप्त विषय परिचायिका ॥

१– अपने धाम को पधारना। २—राजा परीक्षित के भय का नाश। ३—वेदों का विभाग।

❀ इति सम्पूर्णम् ❀

॥ श्रीकृष्णाय नमः ॥ श्रीगोपीजनवल्लभाय नमः ॥

अथ श्रीपुरुषोत्तम सहस्रनाम स्तोत्रम् ।

❀ मंगलाचरणम् ❀

बर्हापीडं नटवरवपुः कर्णयोः कर्णिकारं,
बिभ्रद्वासः कनककपिशं वैजयन्तीं च मालाम् ।
रन्ध्रान् वेणोरधरसुधया पूरयन् गोपवृन्दै-
र्वृन्दारण्यं स्वपदरमणं प्राविशद् गीतकीर्तिः ॥ १ ॥
पुराणपुरुषो विष्णुः पुरुषोत्तम उच्यते ।
नाम्नां सहस्रं वक्ष्यामि तस्य भागवतोद्धृतम् ॥ १ ॥

❀ एतन्महात्म्यम् ❀

यस्य प्रसादाद्वागीशाः प्रजेशा विभवोन्नताः ।
क्षुद्रा अपि भवन्त्याशु श्रीकृष्णं तं नतोऽस्म्यहम् ॥२॥
अनन्ता एव कृष्णस्य लीला नामप्रवर्तिकाः ।
उक्ता भागवते गूढाः प्रकटा अपि कुत्रचित् ॥ ३ ॥
अतस्तानि प्रवक्ष्यामि नामानि मुरवैरिणः ।
सहस्रं यैस्तु पठितैः पठितं स्याच्छुकामृतम् ॥ ४ ॥

❀ ऋष्यादयः ❀

कृष्णनामसहस्रस्य ऋषिरग्निर्निरूपितः ।
गायत्री च तथा छन्दो देवता पुरुषोत्तमः ॥ ५ ॥
विनियोगः समस्तेषु पुरुषार्थेषु वै मतः ।
बीजं भक्तप्रियः शक्तिः सत्यवागुच्यते हरिः ॥ ६ ॥
भक्तोद्धरणयत्नस्तु मंत्रोऽत्र परमो मतः ।
अवतारितभक्तांशः कीलकं परिकीर्तितम् ॥ ७ ॥
अस्त्रं सर्वसमर्थश्च गोविंदः कवचंमतम् ।
पुरुषो ध्यानमत्रोक्तं सिद्धिः शरणसंस्मृतिः ॥ ८ ॥

श्रीसहस्रनामस्तोत्रम् (तत्रादौ प्रथकस्कन्धीयनामानि)

१ २ ३
श्रीकृष्णः सच्चिदानन्दो नित्यलीलाविनोदकृत् ।
४ ५ ६
सर्वागमविनोदी च लक्ष्मीशः पुरुषोत्तमः ॥ ९ ॥
७ ८ ९ १०
आदिकालः सर्वकालः कालात्मा माययावृतः ।
११ १२ १३
भक्तोद्धारप्रयत्नात्मा जगत्कर्ता जगन्मयः ॥ १० ॥
१४ १५ १६ १७
नामलीलापरो विष्णुर्व्यासात्मा शुकमोक्षदः ।
१८ १९
व्यापिवैकुण्ठदाता च श्रीमद्भागवतागमः ॥ ११ ॥
२० २१
शुकवागमृताब्धीन्दुः शौनकाद्यखिलेष्टदः ।

२२ २३ २४
भक्तिप्रवर्तकस्त्राता व्यासचिन्ताविनाशकः ॥ १२ ॥
२५ २६
सर्वसिद्धान्तवागात्मा नारदाद्यखिलेष्टदः ।
२७ २८ २९
अन्तरात्मा ध्यानगम्यो भक्तिरत्नप्रदायकः ॥ १३ ॥
३० ३१ ३२
मुक्तोपसृप्यः पूर्णात्मा मुक्तानां रतिवर्धनः ।
३३ ३४
भक्तकार्यैकनिरतो द्रौण्यस्त्रविनिवारकः ॥ १४ ॥
३५ ३६
भक्तस्मयप्रणेता च भक्तवाक्परिपालकः ।
३७ ३८ ३९
ब्रह्मण्यदेवो धर्मात्मा भक्तानां च परीक्षकः ॥ १५ ॥
४० ४१ ४२
आसन्नहितकर्ता च मायाहितकरः प्रभुः ।
४३ ४४
उत्तराप्राणदाता च ब्रह्मास्त्रविनिवारकः ॥ १६ ॥
४५ ४६
सर्वतः पांडवपतिः परीक्षिच्छुद्धिकारणम् ।
४७ ४८
गूढात्मा सर्ववेदेषु भक्तैकहृदयंगमः ॥ १७ ॥
४९ ५० ५१
कुन्तीस्तुत्यः प्रसन्नात्मा परमाद्भुतकार्यकृत् ।
५२ ५३ ५४
भीष्ममुक्तिप्रदः स्वामी भक्तमोहनिवारकः ॥ १८ ॥
५५ ५६ ५७
सर्वावस्थासु संसेव्यः समः सुखहितप्रदः ।

५८ ५९ ६०
कृतकृत्यः सर्वसाक्षी भक्तस्त्रीरतिवर्द्धनः ॥ १९ ॥
६१ ६२
सर्वसौभाग्यनिलयः परमाश्चर्यरूपधृक् ।
६३ ६४
अनन्यपुरुषस्वामी द्वारकाभाग्यभाजनम् ॥ २० ॥
६५ ६६
बीजसंस्कारकर्ता च परीक्षिज्ज्ञानपोषकः ।
६७ ६८
सर्वत्रपूर्णगुणकः सर्वभूषणभूषितः ॥ २१ ॥
६९ ७०
सर्वलक्षणदाता च धृतराष्ट्रविमुक्तिदः ।
७१ ७२
सन्मार्गरक्षको नित्यं विदुरप्रीतिपूरकः ॥ २२ ॥
७३ ७४
लीलाव्यामोहकर्ता च कालधर्मप्रवर्तकः ।
७५ ७६
पांडवानां मोक्षदाता परीक्षिद्भाग्यवर्द्धनः ॥ २३ ॥
७७ ७८
कलिनिग्रहकर्ता च धर्मादीनां च पोषकः ।
७९ ८०
सत्संगज्ञानहेतुश्च श्रीभागवतकारणम् ॥ २४ ॥
८१
प्राकृतादृष्टमार्गश्च

❀ अतः परं द्वितीयस्कन्धीयनामानि ❀

८२
श्रोतव्यः सकलागमैः ।
८३ ८४
कीर्तितव्यः शुद्धभावैः स्मर्तव्यश्चात्मवित्तमैः ॥ २५ ॥

८५ ८६
अनेकमार्गकर्ता च नानाविधगतिप्रदः ।
८७ ८८ ८९
पुरुषः सकलाधारः सत्त्वैकनिलयात्मभूः ॥ २६ ॥
९० ९१ ९२ ९३
सर्वध्येयो योगगम्यो भक्त्या ग्राह्यः सुरप्रियः ।
९४ ९५ ९६
जन्मादिसार्थककृतिर्लीलाकर्ता पतिः सताम् ॥ २७ ॥
९७ ९८ ९९ १००
आदिकर्ता तत्त्वकर्ता सर्वकर्ता विशारदः ।
१०१ १०२
नानावतारकर्ता च ब्रह्माविर्भावकारणम् ॥ २८ ॥
१०३ १०४
दशलीलाविनोदी च नानासृष्टिप्रवर्तकः ।
१०५ १०६
अनेककल्पकर्ता च सर्वदोषविवर्जितः ॥ २९ ॥

❀ अतः परं तृतीयस्कन्धीयनामानि ❀

१०७ १०८ १०९
वैराग्यहेतुस्तीर्थात्मा सर्वतीर्थफलप्रदः ।
११० १११
तीर्थशुद्ध्यैकनिलयः स्वमार्गपरिपोषकः ॥ ३० ॥
११२ ११३ ११४
तीर्थकीर्तिर्भक्तगम्यो भक्तानुशयकार्यकृत् ।
११५ ११६ ११७
भक्ततुल्यः सर्वतुल्यः स्वेच्छासर्वप्रवर्तकः ॥ ३१ ॥
११८ ११९ १२०
गुणातीतोऽनवद्यात्मा सर्गलीलाप्रवर्तकः ।

१२१ १२२
साक्षात्सर्वजगत्कर्ता महदादिप्रवर्तकः ॥ ३२ ॥
१२३ १२४ १२५
मायाप्रवर्तकः साक्षी मायारतिविवर्धनः ।
१२६ १२७ १२८ १२९
आकाशात्मा चतमूर्तिश्चतुर्धाभूतभावनः ॥ ३३ ॥
१३० १३१ १३२
रजःप्रवर्तको ब्रह्मा मारीच्यादिपितामहः ।
१३३ १३४ १३५ १३६
वेदकर्ता यज्ञकर्ता सर्वकर्ताऽमितात्मकः ॥ ३४ ॥
१३७ १३८
अनेक सृष्टिकर्ता च दशधासृष्टिकारकः ।
१३९ १४० १४१ १४२
यज्ञांगो यज्ञवाराहो भूधरो भूमिपालकः ॥ ३५ ॥
१४३ १४४ १४५ १४६ १४७
सेतुर्विधरणो जैत्रो हिरण्याक्षांतक सुरः ।
१४८
दितिकश्यपकामैकहेतुसृष्टिप्रवर्तकः ॥ ३६ ॥
१४९ १५० १५१
देवाभयप्रदाता च वैकुंठाधिपतिर्महान् ।
१५२ १५३
सर्वगर्वप्रहारी च सनकाद्यखिलार्थदः ॥ ३७ ॥
१५४ १५५
सर्वाश्वासनकर्ता च भक्ततुल्याहवप्रदः ।
१५६ १५७ १५८
काललक्षणहेतुश्च सर्वार्थज्ञापकः परः ॥ ३८ ॥
१५९ १६०
भक्तोन्नतिकरः सर्वप्रकारसुखदायकः ।

१६१ १६२
नानायुद्धप्रहरणो ब्रह्मशापविमोचकः ॥ ३६ ॥
१६३ १६४
पुष्टिसर्गप्रणेता च गुणसृष्टिप्रवर्तकः ।
१६५ १६६
कर्दमेष्टप्रदाता च देवहूत्यखिलार्थदः ॥ ४० ॥
१६७ १६८
शुक्ल नारायणः सत्यकालधर्मप्रवर्तकः ।
१६६ १७० १७१ १७२
ज्ञानावतारः शान्तात्मा कपिलः कालनाशकः ॥ ४१ ॥
१७३ १७४ १७५
त्रिगुणाधिपतिः सांख्यशास्त्रकर्ता विशारदः ।
१७६ १७७
सर्गदूषणहारी च पुष्टिमोक्षप्रवर्तकः ॥ ४२ ॥
१७८ १७६
लौकिकानंददाता च ब्रह्मानन्दप्रवर्तकः ।
१८० १८१
भक्तिसिद्धान्तवक्ता च सगुणज्ञानदीपकः ॥ ४३ ॥
१८२ १८३ १८४ १८५
आत्मप्रदः पूर्णकामो योगात्मा योगभावितः ।
१८६ १८७ १८८
जीवन्मुक्तिप्रदः श्रीमाननन्यभक्तिप्रवर्तकः ॥ ४४ ॥
१८६ १६०
कालसामर्थ्यदाता च कालदोषनिवारकः ।
१६१ १६२
गर्भोत्तमज्ञानदाता कर्ममार्गनियामकः ॥ ४५ ॥
११३ १६४
सर्वमार्गनिराकर्ता भक्तिमार्गैकपोषकः ।

१९५ १९६ १९७
सिद्धिहेतुः सर्वहेतुः सर्वाश्चर्यैककारणम् ॥ ४६ ॥
१९८ १९९
चेतनाचेतनपतिः समुद्रपरिपूजितः ।
२२० २०१ २०२
सांख्याचार्यस्तुतः सिद्धपूजितः सर्वपूजितः ॥ ४७ ॥

❀ अतः परं चतुर्थस्कन्धीयनामानि ❀

२०३ २०४ २०५
विसर्गकर्ता सर्वेशः कोटिसूर्यसमप्रभः ।
२०६ २०७
अनन्तगुणगम्भीरो महापुरुषपूजितः ॥ ४८ ॥
२०८ २०९
अनन्तसुखदाता च ब्रह्मकोटिप्रजापतिः ।
२१० ११
सुधाकोटिस्वास्थ्यहेतुः कामधुक्कोटिकामदः ॥ ४९ ॥
२१२ २१३
समुद्रकोटिगम्भीरस्तीर्थकोटिसमाह्वयः ।
२१४ २१५
सुमेरुकोटिनिष्कम्पः कोटिब्रह्माण्डविग्रहः ॥ ५० ॥
२१६ २१७
कोट्यश्वमेधपापघ्नो वायुकोटिमहाबलः ।
२१८ २१९
कोटीन्दुजगदानन्दी शिवकोटिप्रसादकृत् ॥ ५१ ॥
२२० २२१
सर्वसद्गुणमाहात्म्यः सर्वसद्गुणभाजनम् ।
२२२ २२३ २२४ २२५
मन्वादिप्रेरको धर्मो यज्ञनारायणः परः ॥ ५२ ॥

२२६ २२७ २२८ २२९
आकूतिसूनुर्देवेन्द्रो रुचिजन्माऽभयप्रदः ।
२३० २३१ २३२ २३३
दक्षिणापतिरोजस्वी क्रियाशक्तिः परायणः ॥ ५३ ॥
२३४ २३५ २३६
दत्तात्रेयो योगपतिर्योगमार्गप्रवर्तकः ।
२३७ २३८
अनसूयागर्भरत्नमृषिवंशविवर्द्धनः ॥ ५४ ॥
२३९ २४०
गुणत्रयविभागश्चतुर्वर्गविशारदः ।
२४१ २४२ २४३
नारायणो धर्मसूनुर्मूर्तिपुण्ययशस्करः ॥ ५५ ॥
२४४ २४५ २४६
सहस्रकवचच्छेदी तपः सारो नरप्रियः ।
२४७ २४८ २४९
विश्वानन्दप्रदः कर्मसाक्षी भारतपूजितः ॥ ५६ ॥
२५० २५१
अनन्ताद्भुतमाहात्म्यो बदरीस्थानभूषणम् ।
२५२ २५३ २५४ २५५
जितकामो जितक्रोधो जितसंगो जितेन्द्रियः ॥ ५७ ॥
२५६ २५७ २५८
उर्वशीप्रभवः स्वर्गसुखदायी स्थितिप्रदः ।
२५९ २६० २६१ २६२
अमानी मानदो गोप्ता भगवच्छास्त्रबोधकः ॥ ५८ ॥
२६३ २६४ २६५ २६६
ब्रह्मादिवन्द्यो हंसः श्रीर्मायावैभवकारणम् ।
२६७ २६८
विविधानन्तसर्गात्मा विश्वपूरणतत्परः ॥ ५९ ॥

२६९ २७० २७१
यज्ञजीवनहेतुश्च यज्ञस्वामीष्टबोधकः ।
७२ २७३ २७४
नामासिद्धान्तगम्यश्च सप्ततन्तुश्च षड्गुणः ॥ ६० ॥
२७५ २७६
प्रतिसर्गजगत्कर्ता नानालीलाविशारदः ।
२७७ २७८ २७९
ध्रुवप्रियो ध्रुवस्वामी चिन्तिताधिकदायकः ॥ ६१ ॥
२८० २८१ २८२
दुर्लभानन्तफलदो दयानिधिरमित्रहा ।
२८३ २८४ २८५ २८६
अङ्गस्वामी कृपासारो वैन्यो भूमिनियामकः ॥ ६२ ॥
२८७ २८८
भूमिदोग्धा प्रजाप्राणपालनैकपरायणः ।
२८९ २९० २९१
यशोदाताज्ञानदाता सर्वधर्मप्रदर्शकः ॥ ६३ ॥
२९२ २९३ २९४
पुरञ्जनो जगन्मित्रं विसर्गान्तप्रदर्शकः ।
२९५ २९६ २९७
प्रचेतसां पतिश्चित्रभक्तिहेतुर्जनार्दनः ॥ ६४ ॥
२९८ २९९ ३००
स्मृतिहेतुर्ब्रह्मभावसायुज्यादिप्रदः शुभः । विजयी

❀ अतः परं पञ्चम स्कन्धीयनामानि ❀

३०१ ३०२ ३०३
स्थितिलीलाब्धिरच्युतो विजयप्रदः ॥ ६५ ॥
३०४ ३०५ ३०६
स्वसामर्थ्यप्रदो भक्तकीर्तिहेतुरधोक्षजः ।

३०७ ३०८
प्रियव्रतप्रियस्वामी स्वेच्छावादविशारदः ॥ ६६ ॥
३०९ ३१० ३११
संख्यगम्यः स्वप्रकाशः सर्वसंगविवर्जितः ।
३१२ ३१३
इच्छायां च समर्थोऽस्त्यागमात्रोपलंभनः ॥ ६७ ॥
३१४ ३१५
अचिन्त्यकार्यकर्ता च तर्कागोचरकार्यकृत् ।
३१६ ३१७
शृङ्गाररसमर्यादा आग्नीध्ररसभोजनम् ॥ ६८ ॥
३१८ ३१९
नाभीष्टपूरकः कर्ममर्यादादर्शनोत्सुकः ।
३२० ३२१ ३२२
सर्वरूपोऽद्भुततमो मर्यादापुरुषोत्तमः ॥ ६९ ॥
३२३ ३२४ ३२५
सर्वरूपेषुसत्यात्मा कालसाक्षी शशिप्रभः ।
३२६ ३२७ ३२८
मरुदेवीव्रतफलमृषभो भगलक्षणः ॥ ७० ॥
३२९ ३३० ३३१
जगत्संतर्पको मेघरूपी देवेन्द्रदर्पहा ।
३३२ ३३३
जयन्तीपतिरत्यन्तप्रमाणाशेषलौकिकः ॥ ७१ ॥
३३४ ३३५ ३३६
शतधान्यस्तभूतात्मा शतानन्दो गुणप्रसूः ।
३३७ ३३८
वैष्णवोत्पादनपरः सर्वधर्मोपदेशकः ॥ ७२ ॥
३३९ ३४०
परहंसक्रियागोप्ता योगचर्याप्रदर्शकः ।

३४१ ३४२
चतुर्थाश्रमनिर्णेता सदानन्दशरीरवान् ॥ ७३ ॥
३४३ ३४४ ३४५
प्रदर्शितान्यधर्मश्च भरतस्वाम्यपारकृत् ।
३४६ ३४७
यथावत्कर्मकर्ता च सज्ज्ञानिष्टप्रदर्शकः ॥ ७४ ॥
३४८
आवश्यकपुनर्जन्मकर्ममार्गप्रदर्शकः ।
३४९ ३५० ३५१ ३५२
यज्ञरूपमृगः शान्तः सहिष्णुः सत्पराक्रमः ॥७५॥
३५३ ३५४
रहूगणागतिज्ञश्च रहूगणविमोचकः ।
३५५ ३५६
भवाटवीतत्त्ववक्ता बहिर्मुखहिते रतः ॥ ७६ ॥
३५७ ३५८ ३५९
गयस्वामी स्थानवंशकर्ता स्थानविभेदकृत् ।
३६० ३६१
पुरुषावयवो भूमिविशेषविनिरूपकः ॥ ७७ ॥
३६२ ३६३
जम्बूद्वीपपतिर्मेरुनाभिपद्मरुहाश्रयः ।
३६४ ३६५
नानाविभूतिलीलाढ्यो गङ्गोत्पत्तिनिदानकृत् ॥७८॥
३६६ ३६७ ३६८
गङ्गामाहात्म्यहेतुश्च गङ्गारूपोऽतिगूढकृत् ।
३६९ ३७०
वैकुण्ठदेहहेत्वंबुजन्मकृत्सर्वपावनः ॥ ७९ ॥
३७१ ३७२ ३७३ ३७४
शिवस्वामी शिवोपास्यो गूढः संकर्षणात्मकः ।

३७५ ३७६
स्थानरक्षार्थमत्स्यादिरूपः सर्वैकपूजितः ॥ ८० ॥

३७७ ३७८ ३७९
उपास्यनानारूपात्मा ज्योतीरूपो गतिप्रदः ।

३८० ३८१ ३८२
सूर्यनारायणो वेदकान्तिरुज्ज्वलवेषधृक् ॥ ८१ ॥

३८३ ३८४ ३८५
हंसोऽन्तरिक्षगमनः सर्वप्रसवकारणम् ।

३८६ ३८७ ३८८ ३८९ ३९०
आनन्दकर्ता वसुदो बुधो वाकपतिरुज्ज्वलः ॥८२॥

३९१ ३९२ ३९३ ३९४
कालात्मा कालकालश्च कालच्छेदकृदुत्तमः ।

३९५ ३९६ ३९७
शिशुमारः सर्वमूर्तिराधिदैवकरूपधृक् ॥ ८३ ॥

३९८ ३९९
अनन्तसुखभोगाढ्यो विवरैश्वर्यभाजनम् ।

४०० ४०१ ४०२ ४०३
संकर्षणो दैत्यपतिः सर्वाधारो बृहद्वपुः ॥ ८४ ॥

४०४ ४०५
अनन्तनरकच्छेदी स्मृतिमात्रार्तिनाशनः ।

४०६
सर्वानुग्रहकर्ता च

❀ अतः परं षष्ठ स्कन्धीयनामानि ❀

४०७
मर्यादाभिन्नशास्त्रकृत् ॥ ८५ ॥

४०८ ४०९
कालान्तकभयच्छेदी नामसामर्थ्यरूपधृक् ।

४१०　　　　　　　　४११
उद्धारानर्हगोप्त्रात्मा नामादिप्रेरकोत्तमः ॥ ८६ ॥
　　४१२　　　　　　　४१३
अजामिलमहादुष्टमोचकोऽघविमोचकः ।
४१४　　४१५　　४१६
धर्मवक्ताऽक्लिष्टवक्ता विष्णुधर्मस्वरूपधृक् ॥ ८७ ॥
४१७　　　४१८　४१९　　४२०
सन्मार्गप्रेरको धर्त्ता त्यागहेतुरधोक्षजः ।
४२१　　　　　　　४२२
वैकुंठपुरनेता च दाससंवृद्धिकारकः ॥ ८८ ॥
४२३　　　　　　४२४
दत्तप्रसादकृद्धंसगुह्यस्तुतिविभावनः ।
४२५　　　　　　४२६
स्वाभिप्रायप्रवक्ता च मुक्तजीवप्रसूतिकृत् ॥ ८९ ॥
४२७　　　　　　४२८
नारदप्रेरणात्मा च हर्यश्वब्रह्मभावनः ।
४२९　　　　४३०
शबलाश्वहितो गूढवाक्यार्थज्ञापनक्षमः ॥ ९० ॥
४३१　　　　४३२
गूढार्थज्ञापकः सर्वमोक्षानन्दप्रतिष्ठितः ।
४३३　　　　　४३४
पुष्टिप्ररोहहेतुश्च दासैकज्ञातहृद्गतः ॥ ९१ ॥
४३५　　　４३६　　४३७　　　४३८
शान्तिकर्त्ता सुहितकृत् स्त्रीप्रसूः सर्वकामधुक् ।
४३९　　　　４४०
पुष्टिवंशप्रणेता च विश्वरूपेष्टदेवता ॥ ९२ ॥
४४१　　　　４४२　　　　　४४३
कवचात्मा पालनात्मा वर्मोपचितिकारणम् ।

४४४ ४४५
विश्वरूपशिरश्छेदी त्वाष्ट्रयज्ञविनाशकः ॥ ९३ ॥
४४६ ४४७ ४४८
वृत्रस्वामी वृत्रगम्यो वृत्रव्रतपरायणः ।
४४९ ४५० ४५१
वृत्रकीर्तिर्वृत्रमोक्षो मघवत्प्राणरक्षकः ॥ ९४ ॥
४५२ ४५३
अश्वमेधहविर्भोक्ता देवेन्द्रामीवनाशकः ।
४५४ ४५५
संसारमोचकश्चित्रकेतुबोधनतत्परः ॥ ९५ ॥
४५६ ४५७ ४५८
मन्त्रसिद्धिः सिद्धिहेतुः सुसिद्धिफलदायकः ।
४५९ ४६०
महादेवतिरस्कर्ता भक्त्यै पूर्वार्थनाशकः ॥ ९६ ॥
४६१ ४६२
देवब्राह्मणविद्वेषवैमुख्यज्ञापकः शिवः ।
४६३ ४६४ ४६५ ४६६
आदित्यो दैत्यराजश्च महत्पतिरचिन्त्यकृत् । ९७॥
४६७ ४६८ ४६९ ४७०
मरुतां भेदकस्त्राता व्रतात्मा पुम्प्रसूतिकृत् ।

❀ अतः परं सप्तम स्कन्धीयनामानि ❀

४७१ ४७२ ४७३
कर्मात्मा वासनात्मा च ऊतिलीलापरायणः ॥९८॥
४७४ ४७५ ४७६
समदैत्यसुरःस्वात्मा वैषम्यज्ञानसंश्रयः ।
४७७ ४७८ ४७९
देहाद्युपाधिरहितः सर्वज्ञः सर्वहेतुवित् ॥ ९९ ॥

४८० ४८१
ब्रह्मवाक्स्थापनपरः स्वजन्मावधिकार्यकृत् ।
४८२ ४८३ ४८४
सदसद्वासनाहेतुस्त्रिसत्यो भक्तमोचकः ॥ १०० ॥
४८५ ४८६ ४८७
हिरण्यकशिपुद्वेषी प्रविष्टात्मातिभीषणः ।
४८८ ४८९
शांतिज्ञानादिहेतुश्च प्रह्लादोत्पत्तिकारणम् ॥ १०१ ॥
४९० ४९१ ४९२
दैत्यसिद्धांतसद्वक्ता तपःसार उदारधीः ।
४९३ ४९४
दैत्यहेतुप्रकटनो भक्तिचिन्हप्रकाशकः ॥ १०२ ॥
४९५ ४९६ ४९७
सद्द्वेषहेतुः सद्द्वेषवासनात्मा निरन्तरः ।
४९८ ४९९ ५००
नैष्ठुर्यसीमा प्रह्लादवत्सलः सङ्गदोषहा ॥ १०३ ॥
५०१ ५०२ ५०३ ५०४
महानुभावः साकारः सर्वाकारः प्रमाणभूः ।
५०५ ५०६ ५०७ ५०८
स्तम्भप्रसूतिर्नृहरिर्नृसिंहो भीमविक्रमः ॥ १०४ ॥
५०९ ५१० ५११ ५१२
विकटास्यो ललज्जिह्वो नखशस्त्रो जवोत्कटः ।
५१३ ५१४
हिरण्यकशिपुच्छेदी क्रूरदैत्यनिवारकः ॥ १०५ ॥
५१५ ५१६ ५१७
सिंहासनस्थः क्रोधात्मा लक्ष्मीभयविवर्धनः ।
५१८ ५१९
ब्रह्माद्यत्यन्तभयभूरपूर्वाचिन्त्यरूपधृक् ॥ १०६ ॥

५२० ५२१ ५२२
भक्तैकशांतहृदयो भक्तस्तुत्यः स्तुतिप्रियः ।
५२३ ५२४
भक्तांगलेहनोद्धूतक्रोधपुञ्जः प्रशांतधीः ॥ १०७ ॥
५२५ ५२६
स्मृतिमात्रभयत्राता ब्रह्मबुद्धिप्रदायकः ।
५२७ ५२८ ५२९
गोरूपधार्यमृतपाः शिवकीर्तिविवर्धनः ॥ १०८ ॥
५३० ५३१ ५३२ ५३३
धर्मात्मासर्वकर्मात्मा विशेषात्माऽऽश्रमप्रभुः ।
५३४ ५३५
संसारमग्नस्वोद्धर्ता सन्मार्गाखिलतत्त्ववाक् ॥ १०९ ॥
५३६ ५३७
आचारात्मा सदाचारः

❀ अतः परमष्टमस्कन्धीयनामानि ❀

५३८
मन्वन्तरविभावनः ।
५३९ ५४०
स्मृत्याऽशेषाशुभहरो गजेन्द्रस्मृतिकारणम् ॥ ११० ॥
५४१
जातिस्मरणहेत्वेकपूजाभक्तिस्वरूपदः ।
५४२ ५४३ ५४४ ५४५
यज्ञो भयान्मनुत्राता विभुर्ब्रह्मव्रताश्रयः ॥ १११ ॥
५४६ ५४७ ५४८ ५४९
सत्यसेनो दुष्टघाती हरिर्गजविमोचकः ।
५५० ५५१ ५५२ ५५३
वैकुण्ठो लोककर्ता च अजितोऽमृतकारणम् ॥११२॥

५५४ ५५५ ५५६ ५५७
उरुक्रमो भूमिहर्ता सार्वभौमो बलिप्रियः ।
५५८ ५५९ ५६० ५६१
विभुः सर्वहितैकात्मा विष्वक्सेनः शिवप्रियः ॥११३॥
५६२ ५६३ ५६४
धर्मसेतुर्लोकधृतिः सुधामान्तरपालकः ।
५६५ ५६६ ५६७
उपहर्तायोगपतिर्बृहद्भानुः क्रियापतिः ॥ ११४ ॥
५६८ ५६९ ५७०
चतुर्दशप्रमाणात्मा धर्मो मन्वादिबोधकः ।
५७१ ५७२
लक्ष्मीभोगैकनिलयो देवमन्त्रप्रदायकः ॥ ११५ ॥
५७३ ५७४
दैत्यव्यामोहकः साक्षाद्गरुडस्कन्धसंश्रयः ।
५७५ ५७६
लीलामन्दरधारी च दैत्यवासुकिपूजितः ॥ ११६ ॥
५७७ ५७८ ५७९
समुद्रोन्मथनायत्तोऽविघ्नकर्त्ता स्ववाक्यकृत् ।
५८० ५८१ ५८२
आदिकूर्मः पवित्रात्मा मन्दराघर्षणोत्सुकः ॥ ११७ ॥
५८३ ५८४
श्वासैजदब्धिवार्वीचिः कल्पान्तावधिकार्यकृत ।
५८५ ५८६
चतुर्दशमहारत्नो लक्ष्मीसौभाग्यवर्धनः ॥ ११८ ॥
५८७ ५८८ ५८९ ५९०
धन्वन्तरिः सुधाहस्तो यज्ञभोक्तार्तिनाशनः ।
५९१ ५९२
आयुर्वेदप्रणेता च देवदैत्याखिलार्चितः ॥ ११९ ॥

५९३ ५९४
बुद्धिव्यामोहको देवकार्यसाधनतत्परः ।
५९५ ५९६ ५९७
स्त्रीरूपो मायया वक्ता दैत्यांतः करणप्रियः ॥१२०॥
५९८ ५९९
पायितामृतदेवांशो युद्धहेतुस्मृतिप्रदः ।
६०० ६०१
सुमालिमालिवधकृन्माल्यवत्प्राणहारकः ॥ १२१ ॥
६०२ ६०३
कालनेमिशिरश्छेदी दैत्ययज्ञविनाशकः ।
६०४ ६०५
इन्द्रसामर्थ्यदाता च दैत्यशेषस्थितिप्रियः ॥१२२॥
६०६ ६०७ ६०८
शिवव्यामोहको मायी भृगुमन्त्रस्वशक्तिदः ।
६०९ ६१० ६११
बलिजीवनकर्ता च स्वर्गहेतुर्व्रताचितः ॥१२३॥
६१२ ६१३
अदित्यानन्दकर्ता च कश्यपादितिसम्भवः ।
६१४ ६१५ ६१६
उपेन्द्र इन्द्रावरजो वामनब्रह्मरूपधृक् ॥१२४॥
६१७ ६१८
ब्रह्मादिसेवितवपुर्यज्ञपावनतत्परः ।
६१९ ६२०
याच्ञोपदेशकर्त्ता च ज्ञापिताशेषसंस्थितिः ॥१२५॥
६२१ ६२२ ६२३
सत्यार्थप्रेरकः सर्वहर्ता गर्वविनाशकः ।
६२४ ६०५ ५२६ ६२७
त्रिविक्रमस्त्रिलोकात्मा विश्वमूर्तिः पृथुश्रवाः ॥१२६॥

६२८ ६२९
पाशबद्धबलिः सर्वदैत्यपक्षोपमर्दकः ।
६३० ६३१
सुतलस्थापितबलिः स्वर्गाधिकसुखप्रदः ॥१२७॥
६३२ ६३३
कर्मसम्पूर्तिकर्ता च स्वर्गसंस्थापितामरः ।
६३४ ६३५ ६३६
ज्ञातत्रिविधधर्मात्मा महामीनोऽब्धिसंश्रयः ॥१२८॥
६३७ ६३८ ६३९
सत्यव्रतप्रियो गोप्ता मत्स्यमूर्तिधृतश्रुतिः ।
६४० ६४१ ६४२
शृङ्गबद्धधृतक्षोणिः सर्वार्थज्ञापको गुरुः ॥१२९॥

❀ अतः परं नवम स्कन्धीयनामानि ❀

६४३ ६४४
ईशसेवकलीलात्मा सूर्यवंशप्रवर्तकः ।
६४५ ६४६
सोमवंशोद्भवकरो मनुपुत्रगतिप्रदः ॥१३०॥
६४७ ६४८ ६४९
अम्बरीषप्रियः साधुदुर्वासोगर्वनाशकः ।
६५० ६५१
ब्रह्मशापोपसंहर्त्ता भक्तकीर्तिविवर्द्धनः ॥१३१॥
६५२ ६५३
इक्ष्वाकुवंशजनकः सगराद्यखिलार्थदः ।
६५४ ६५५
भागीरथमहायत्नो गंगाधौताङ्घ्रिपङ्कजः ॥१३२॥
६५६ ६५७ ६५८
ब्रह्मस्वामी शिवस्वामी सगरात्मजमुक्तिदः ।

६५९ ६६०
खट्वाङ्गमोक्षहेतुश्च रघुवंशविवर्द्धनः ॥१३३॥
६६१ ६६२ ६६३ ६६४
रघुनाथो रामचन्द्रो रामभद्रो रघुप्रियः ।
६६५ ६६६ ६६७
अनन्तकीर्तिः पुण्यात्मा पुण्यश्लोकैकभास्करः ॥१३४॥
६६८ ६६९ ६७० ६७१
कोशलेन्द्रः प्रमाणात्मा सेव्यो दशरथात्मजः ।
६७२ ६७३ ६७४ ६७५
लक्ष्मणो भरतश्चैव शत्रुघ्नो व्यूहविग्रहः ॥१३५॥
६७६ ६७७ ६७८
विश्वामित्रप्रियो दान्तस्ताडकावधमोक्षदः ।
६७९ ६८०
वायव्यास्त्राब्धिनिक्षिप्तमारीचश्च सुबाहुहा ॥१३६॥
६८१
वृषध्वजधनुर्भंगप्राप्तसीतामहोत्सवः ।
६८२ ६८३
सीतापतिर्भृगुपतिगर्वपर्वतनाशकः ॥१३७॥
६८४
अयोध्यास्थमहाभोगयुक्तलक्ष्मीविनोदवान् ।
६८५ ६८६
कैकेयीवाक्यकर्त्ता च पितृवाक्परिपालकः ॥१३८॥
६८७ ६८८
वैराग्यबोधकोऽनन्यसात्त्विकस्थानबोधकः ।
६८९ ६९० ६९१
अहल्यादुःखहारी च गुहस्वामी सलक्ष्मणः ॥१३९॥
६९२ ६९३
चित्रकूटप्रियस्थानो दण्डकारण्यपावनः ।

६६४ ६६५
शरभङ्गसुतीक्ष्णादिपूजितोऽगस्त्यभाग्यभूः ॥१४०॥
६६६ ६६७
ऋषिसंप्रार्थितकृतिर्विराधवधपंडितः ।
६६८ ६६९
छिन्नशूर्पणखानासः खरदूषणघातकः ॥१४१॥
७००
एकबाणहतानेकसहस्रबलराक्षसः ।
७०१ ७०२
मारीचघाती नियतसीतासम्बन्धशोभनः ॥१४२॥
७०३ ७०४
सीतावियोगनाट्यश्च जटायुर्वधमोक्षदः ।
७०५ ७०६
शबरीपूजितो भक्तहनुमत्प्रमुखावृतः ॥१३३॥
७०७ ७०८
दुन्दुभ्यस्थिप्रहरणः सप्ततालविभेदनः ।
७०९ ७१० ७११
सुग्रीवराज्यदो वालिघाती सागरशोषणः ॥१४४॥
७१२ ७१३
सेतुबन्धनकर्त्ता च विभीषणहितप्रदः ।
७१४ ७१५
रावणादिशिरश्छेदी राक्षसाघौघनाशकः ॥१४५॥
७१६ ७१७
सीताऽभयप्रदाता च पुष्पकागमनोत्सुकः ।
७१८ ७१९
अयोध्यापतिरत्यन्तसर्वलोकसुखप्रदः ॥१४६॥
७२० ७२१
मथुरापुरनिर्माता सुकृतज्ञस्वरूपदः ।

७२२ ७२३
जनकज्ञानगम्यश्च ऐलान्तप्रकटश्रुतिः ॥१४७॥
७२४ ७२५ ७२६
हैहयान्तकरो रामो दुष्टक्षत्रविनाशकः ।
७२७ ७२८
सोमवंशहितैकात्मा यदुवंशविवर्द्धनः ॥१४८॥

❀ अतः परं दशम स्कन्धीयनामानि ❀

७२९ ७३० ७३१
परब्रह्मावतरणः केशवः क्लेशनाशनः ।
७३२ ७३३
भूमिभारावतरणो भक्तार्थाखिलमानसः ॥ १४९ ॥
७३४ ७३५
सर्वभक्तनिरोधात्मा लीलानन्तनिरोधकृत् ।
७३६ ७३७
भूमिष्ठपरमानन्दो देवकीशुद्धिकारणम् ॥१५०॥
७३८
वसुदेवज्ञाननिष्ठसमजीवनिवारकः ।
७३९
सर्ववैराग्यकरणस्वलीलाधारशोधकः ॥ १५१ ॥
७४० ७४१
मायाज्ञापनकर्त्ता च शेषसम्भारसम्भृतिः ।
७४२ ७४३
भक्तक्लेशपरिज्ञाता तन्निवारणतत्परः ॥ १५२ ॥
७४४ ७४५
आविष्टवसुदेवांशो देवकीगर्भभूषणम् ।
७४६ ७४७ ७४८
पूर्णतेजोमयः पूर्णः कंसाधृष्यप्रतापवान् ॥ १५३ ॥

७४९ ७५०
विवेकज्ञानदाता च ब्रह्माद्यखिलसंस्तुतः ।
७५१ ७५२ ७५३
सत्यो जगत्कल्पतरुर्नानारूपविमोहनः ॥ १५४ ॥
७५४ ७५५
भक्तिमार्गप्रतिष्ठाता विद्वन्मोहप्रवर्तकः ।
७५६ ७५७
मूलकालगुणद्रष्टा नयनानन्दभाजनम् ॥ १५५ ॥
७५८ ७५९
वसुदेवसुखाब्धिश्च देवकीनयनामृतम् ।
७६० ७६१
पितृमातृस्तुतः पूर्वसर्ववृत्तान्तबोधकः ॥ १५६ ॥
७६२
गोकुलागतिलीलाप्तवसुदेवकरस्थितिः ।
७६३ ७६४
सर्वेशत्वप्रकटनो मायाव्यत्ययकारकः ॥ १५७ ॥
७६५ ७६६
ज्ञानमोहितदुष्टेशः प्रपञ्चास्मृतिकारणम् ।
७६७ ७६८
यशोदानन्दनो नन्दभाग्यभूर्गोकुलोत्सवः ॥ १५८ ॥
७६९ ७७० ७७१
नन्दप्रियो नन्दसूनुर्यशोदायाः स्तनंधयः ।
७७२ ७७३
पूतनासुपयःपाता मुग्धभावातिसुन्दरः ॥ १५९ ॥
७७४ ७७५
सुन्दरीहृदयानन्दो गोपीमन्त्राभिमन्त्रितः ।
७७६ ७७७
गोपालाश्चर्यरसकृत् शकटासुरखंडनः ॥ १६० ॥

७७८ ७७९
नन्दव्रजजनानन्दी नन्दभाग्यमहोदयः ।
७८० ७८१
तृणावर्तवधोत्साहो यशोदाज्ञानविग्रहः ॥ १६१ ॥
७८२ ७८३ ७८४
बलभद्रप्रियः कृष्णः संकर्षणसहायवान् ।
७८५ ७८६ ७८७
रामानुजो वासुदेवो गोष्ठाङ्गणगतिप्रियः ॥ १६२ ॥
७८८ ७८९
किंकिणीरवभावज्ञो वत्सपुच्छावलम्बनः ।
७९० ७९१
नवनीतप्रियो गोपीमोहसंसारनाशकः ॥ १६३ ॥
७९२ ७९३
गोपबालकभावज्ञश्चौर्यविद्याविशारदः ।
७९४
मृत्स्नाभक्षणलीलास्यमाहात्म्यज्ञानदायकः ॥१६४॥
७९५ ७९६
धराद्रोणप्रीतिकर्ता दधिभांडविभेदनः ।
७९७ ७९८ ७९९
दामोदरो भक्तवश्यो यमलार्जुनभञ्जनः ॥ १६५ ॥
८०० ८०१
बृहद्वनमहाश्चर्यो वृन्दावनगतिप्रियः ।
८०२ ८०३ ८०४
वत्सघाती बालकेलिर्बकासुरनिषूदनः ॥ १६६ ॥
८०५ ८०६
अरण्यभोक्ताऽप्यथवा बाललीलापरायणः ।
८०७ ८०८
प्रोत्साहजनकश्चैवमघासुरनिषूदनः ॥ १६७ ॥

८०९ ८१० ८११
व्यालमोक्षप्रदः पुष्टो ब्रह्ममोहप्रवर्द्धनः ।
८१२ ८१३ ८१४
अनन्तमूर्तिः सर्वात्मा जङ्गमस्थावराकृतिः ॥१६८॥
८१५ ८१६ ८१७ ८१८
ब्रह्ममोहनकर्ता च स्तुत्य आत्मा सदाप्रियः ।
८१९ ८२०
पौगंडलीलाभिरतिर्गोचारणपरायणः ॥ १६९ ॥
८२१
वृन्दावनलतागुल्मवृक्षरूपनिरूपकः ।
८२२ ८२३
नादब्रह्मप्रकटनो वयःप्रतिकृतिस्वनः ॥ १७० ॥
८२४ ८२५
बर्हिनृत्यानुकरणो गोपालानुकृतिस्वनः ।
८२६ ८२७
सदाचारप्रतिष्ठाता बलश्रमनिराकृतिः ॥ १७१ ॥
८२८ ८२९
तरुमूलकृताशेषतल्पशायी सखिस्तुतः ।
८३० ८३१
गोपालसेवितपदः श्रीलालितपदाम्बुजः ॥ १७२ ॥
८३२
गोपसम्प्रार्थितफलदाननाशितधेनुकः ।
८३३
कालीयफणिमाणिक्यरञ्जितश्रीपदाम्बुजः ॥१७३॥
८३४
दृष्टिसञ्जीविताशेषगोपगोगोपिकाप्रियः ।
८३५ ८३६
लीलासम्पीतदावाग्निः प्रलम्बवधपण्डितः ॥१७४॥

८३७
दावाग्न्यावृतगोपालदृष्ट्याच्छादनवह्निपः ।
८३८ ८३९
वर्षाशरद्विभूतिश्रीगोपीकामप्रबोधकः ॥१७५॥
८४०
गोपीरत्नस्तुताशेषवेणुवाद्यविशारदः ।
८४१
कात्यायनीव्रतव्याजसर्वभावाश्रितांगनः ॥१७६॥
८४२
सत्सङ्गतिस्तुतिव्याजस्तुतवृन्दावनांघ्रिपः ।
८४३
गोपक्षुच्छान्तिसंव्याजविप्रभार्याप्रसादकृत् ॥१७७॥
८४४
हेतुप्राप्तेन्द्रयागस्वकार्यगोसवबोधकः ।
८४५
शैलरूपकृताशेषरससभोगसुखावहः ॥ १७८ ॥
८४६
लीलागोवर्द्धनोद्धारपालितस्वव्रजप्रियः ।
८४७
गोपस्वच्छन्दलीलार्थगर्गवाक्यार्थबोधकः ॥१७९॥
८४८
इन्द्रधेनुस्तुतिप्राप्तगोविन्देन्द्राभिधानवान् ।
८४९
व्रतादिधर्मसंसक्तनन्दक्लेशविनाशकः ॥ १८० ॥
८५०
नन्दादिगोपमात्रेष्टवैकुण्ठगतिदायकः ।
८५१
वेणुवादस्मरक्षोभमत्तगोपीविमुक्तिदः ॥ १८१ ॥

८५२
सर्वभावप्राप्तगोपीसुखसंवर्द्धनक्षमः ।
८५३
गोपीगर्वप्रणाशार्थतिरोधानसुखप्रदः ॥ १८२ ॥
८५४
कृष्णभावव्याप्तविश्वगोपीभावितवेषधृक् ।
८५५
राधाविशेषसम्भोगप्राप्तदोषनिवारकः ॥ १८३ ॥
८५६
परमप्रीतिसङ्गीतसर्वाद्भुतमहागुणः ।
८५७
मानापनोदनाक्रन्दगोपीदृष्टिमहोत्सवः ॥ १८४ ॥
८५८ ८५९
गोपिकाव्याप्तसर्वाङ्गः स्त्रीसम्भाषाविशारदः ।
८६०
रासोत्सवमहासौख्यगोपीसम्भोगसागरः ॥ १८५ ॥
८६१
जलस्थलरतिव्याप्तगोपीदृष्ट्यभिपूजितः ।
८६२
शास्त्रानपेक्षकामैकमुक्तिद्वारविवर्द्धनः ॥ १८६ ॥
८६३
सुदर्शनमहासर्पग्रस्तनन्दविमोचकः ।
८६४
गीतमोहितगोपीधृक्शङ्खचूडविनाशकः ॥ १८७ ॥
८६५ ८६६
गुणसङ्गीतसन्तुष्टिर्गोपीसंसारविस्मृतिः ।
८६७ ८६८
अरिष्टमथनोदैत्यबुद्धिव्यामोहकारकः ॥ १८८ ॥

८६९ ८७० ८७१

केशीघाती नारदेष्टो व्योमासुरविनाशकः ।

८७२

अक्रूरभक्तिसंराद्धपादरेणुमहानिधिः ॥ १८९ ॥

८७३ ८७४

रथावरोहशुद्धात्मा गोपीमानसहारकः ।

८७५

ह्रदसंदर्शिताशेषवैकुण्ठाक्रूरसंस्तुतः ॥ १९० ॥

८७६ ८७७

मथुरागमनोत्साहो मथुराभाग्यभाजनम् ।

८७८

मथुरानगरीशोभादर्शनोत्सुकमानसः ॥ १९१ ॥

८७९ ८८०

दुष्टरञ्जकघाती च वायकार्चितविग्रहः ।

८८१ ८८२

वस्त्रमालासुशोभाङ्गः कुब्जालेपनभूषितः ॥ १९२ ॥

८८३ ८८४

कुब्जासुरूपकर्त्ता च कुब्जारतिवरप्रदः ।

८८५

प्रसादरूपसन्तुष्टहरकोदण्डखण्डनः ॥ १९३ ॥

८८६

शकलाहतकंसाप्तधनूरक्षकसैनिकः ।

८८७

जाग्रत्स्वप्नभयव्याप्तमृत्युलक्षणबोधकः ॥ १९४ ॥

८८८ ८८९ ८९०

मथुरामल्लओजस्वी मल्लयुद्धविशारदः ।

८९१ ८९२

सद्यःकुवलयापीडघाती चाणूरमर्दनः ॥ १९५ ॥

८९३ ८९४
लीलाहतमहामल्लः शलतोशलघातकः ।
८९५ ८९६ ८९७
कंसान्तको जितामित्रो वसुदेवविमोचकः ॥ १९६ ॥
८९८
ज्ञाततत्त्वपितृज्ञानमोहनामृतवाङ्मयः ।
८९९ ९००
उग्रसेनप्रतिष्ठाता यादवाधिविनाशकः ॥ १९७ ॥
९०१ ९०२
नन्दादिसान्त्वनकरो ब्रह्मचर्यव्रते स्थितः ।
९०३ ९०४
गुरुशुश्रूषणपरो विद्यापारमितेश्वरः ॥ १९८ ॥
९०५ ९०६
सान्दीपनिमृतापत्यदाता कालान्तकादिजित् ।
९०७ ९०८
गोकुलाश्वासनपरो यशोदानन्दपोषकः ॥ ॥ १९९ ॥
९०९
गोपिकाविरहव्याजमनोगतिरतिप्रदः ।
९१० ९११
समोद्धवभ्रमरवाक्गोपिकामोहनाशकः ॥ २०० ॥
९१२ ९१३
कुब्जारतिप्रदोऽक्रूरपवित्रीकृतभूगृहः ।
९१४ ९१५
पृथादुःखप्रणेता च पांडवानां सुखप्रदः ॥ २०१ ॥

❀ अथ दशमस्कन्धोत्तरार्द्धस्थनामानि ❀

९१६ ९१७
जरासन्धसमानीतसैन्यघाती विचारकः ।

६१८
यवनव्याप्तमथुराजनदत्तकुशस्थलिः ॥ २०२ ॥

६१९
द्वारकाद्भुतनिर्माणविस्मायितसुरासुरः ।

६२०
मनुष्यमात्रभोगार्थभूम्यानीतेन्द्रवैभवः ॥ २०३ ॥

६२१
यवनव्याप्तमथुरानिर्गमानन्दविग्रहः ।

६२२
मुचुकुन्दमहाबोधयवनप्राणदर्पहा ॥ २०४ ॥

६२३
मुचुकुन्दस्तुताशेषगुणकर्ममहोदयः ।

६२४ ६२५
फलप्रदानसन्तुष्टिर्जन्मान्तरितमोक्षदः ॥ २०५ ॥

६२६
शिवब्राह्मणवाक्याप्तजयभीतिविभावनः ।

६२७
प्रवर्षणप्रार्थिताग्निदानपुण्यमहोत्सवः ॥ २०६ ॥

६२८ ६२९ ६३०
रुक्मिणीरमणः कामपिता प्रद्युम्नभावनः ।

६३१
स्यमन्तकमणिव्याजप्राप्तजाम्बवतीपतिः ॥ २०७ ॥

६३२ ६३३
सत्यभामाप्राणपतिः कालिन्दीरतिवर्धनः ।

६३४ ६३५ ६३६
मित्रविन्दापतिः सत्यापतिर्वृषनिषूदनः ॥ २०८ ॥

६३७ ६३८
भद्रावांछितभर्ता च लक्ष्मणावरणक्षमः ।

६३९
इन्द्रादिप्रार्थितवधनरकासुरसूदनः ॥ १०९ ॥
६४० ६४१ ६४२
मुरारिः पीठहन्ता च ताम्रादिप्राणहारकः ।
६४३ ६४४
षोडशस्त्रीसहस्त्रेशश्छत्रकुण्डलदानकृत् ॥ २१० ॥
६४५ ६४६
पारिजातापहरणो देवेन्द्रमदनाशकः ।
६४७
रुक्मिणीसमसर्वस्त्रीसाध्यभोगरतिप्रदः ॥ २११ ॥
६४८
रुक्मिणीपरिहासोक्तिवाक्तिरोधानकारकः ।
६४९
पुत्रपौत्रमहाभाग्यगृहधर्मप्रदर्शकः ॥ २१२ ॥
६५०
शम्बरान्तकसत्पुत्रविवाहहतरुक्मिकः ।
६५१ ६५२
ऊषापहृतपौत्रश्रीबाणबाहुनिवारकः ॥ २१३ ॥
६५३
शीतज्वरभयव्याप्तज्वरसंस्तुतषड्गुणः ।
६५४ ६५५
शंकरप्रतियोद्धा च द्वन्द्वयुद्धविशारदः ॥ २१४ ॥
६५६ ६५७
नृगपापप्रभेत्ता च ब्रह्मस्वगुणदोषदृक् ।
६५८
विष्णुभक्तिविरोधैकब्रह्मस्वविनिवारकः ॥ २१५ ॥
६५९ ६६०
बलभद्राहितगुणो गोकुलप्रीतिदायकः ।

६६१ ६६२
गोपीस्नेहैकनिलयो गोपीप्राणस्थितिप्रदः ॥ २१६ ॥

६६३
वाक्यातिगामियमुनाहलाकर्षणवैभवः ।

६६४ ६६५
पौण्ड्रकत्याजितस्पर्द्धः काशिराजविभेदनः ॥ २१७ ॥

६६६ ६६७
काशीनिदाहकरणः शिवभस्मप्रदायकः ।

६६८ ६६९
द्विविदप्राणघाती च कौरवाखर्वगर्वनुत् ॥ २१८ ॥

६७०
लाङ्गलाकृष्टनगरीसंविग्नाखिलनागरः ।

६७१ ६७२
प्रपन्नाभयदः साम्बप्राप्तसन्मानभाजनम् ॥ २१९ ॥

६७३ ६७४
नारदान्विष्टचरणो भक्तविक्षेपनाशकः ।

६७५ ६७६
सदाचारैकनिलयः सुधर्माध्यासितासनः ॥ २२० ॥

६७७
जरासन्धावरुद्धेन विज्ञापितनिजक्रमः ।

६७८
मन्त्र्युद्धवादिवाक्योक्तप्रकारैकपरायणः ॥ २२१ ॥

६७९ ६८०
राजसूयादिमखकृत् सम्प्रार्थितसहायकृत् ।

६८१
इन्द्रप्रस्थप्रयाणार्थमहत्सम्भारसंभृतिः ॥ २२२ ॥

६८२
जरासन्धवधव्याजमोचिताशेषभूमिपः ।

९८३ ९८४
सन्मार्गबोधको यज्ञक्षितिचारणतत्परः ॥ २२३ ॥
९८५
शिशुपालहतिव्याजजयशापविमोचकः ।
९८६
दुर्योधनाभिमानाब्धिशोषबाणवृकोदरः ॥ २२४ ॥
९८७
महादेववरप्राप्तपुरशाल्वविनाशकः ।
९८८
दन्तवक्त्रवधव्याजविजयाघौघनाशकः ॥ २२५ ॥
९८९ ९९०
विदूरथप्राणहर्ता न्यस्तशस्त्रास्त्रविग्रहः ।
९९१ ९९२
उपधर्मविलिप्ताङ्गसूतघाती वरप्रदः ॥ २२६ ॥
९९३
बल्वलप्राणहरणपालितर्षिश्रुतिक्रियः ।
९९४
सर्वतीर्थाघनाशार्थतीर्थयात्राविशारदः ॥ २२७ ॥
९९५
ज्ञानक्रियाविभेदेष्टफलसाधनतत्परः ।
९९६ ९९७
सारथ्यादिक्रियाकर्त्ता भक्तवश्यत्वबोधकः ॥ २२८ ॥
९९८
सुदामरंकभार्यार्थभूम्यानीतेन्द्रवैभवः ।
९९९
रविग्रहनिमित्ताप्तकुरुक्षेत्रैकपावनः ॥ २२९ ॥
१०००
नृपगोपीसमस्तस्त्रीपावनार्थाखिलक्रियः ।

१००१ १००२
ऋषिमार्गप्रतिष्ठाता वसुदेवमखक्रियः ॥ २३० ॥
१००३ १००४
वसुदेवज्ञानदाता देवकीपुत्रदायकः ।
१००५ १००६
अर्जुनस्त्रीप्रदाता च बहुलाश्वस्वरूपदः ॥ २३१ ॥
१००७ १००८
श्रुतदेवेष्टदाता च सर्वश्रुतिनिरूपितः ।
१००९ १०१०
महादेवाद्यतिश्रेष्ठो भक्तिलक्षणनिर्णयः ॥ २३२ ॥
१०११ १०१२
वृकग्रस्तशिवत्राता नानावाक्यविशारदः ।
१०१३
नरगर्वविनाशार्थहृतब्राह्मणबालकः ॥ २३३ ॥
१०१४
लोकालोकपरस्थानस्थितबालकदायकः ।
१०१५
द्वारकास्थमहाभोगनानास्त्रीरतिवर्द्धनः ॥ २३४ ॥
१०१६
मनस्तिरोधनकृतव्यग्रस्त्रीचित्तभावितः ।

❀ अतः परमेकादशस्कन्धीयनामानि ❀

१०१७ १०१८
मुक्तिलीलाविहरणो मौशलव्याजसंहृतिः ॥ २३५ ॥
१०१९ १०२०
श्रीभागवतधर्मादिबोधको भक्तिनीतिकृत् ।
१०२१ १०२२
उद्धवज्ञानदाता च पञ्चविंशतिधागुरुः ॥ २३६ ॥

१०२३ १०२४
आचारमुक्तिभक्त्यादिवक्ता शब्दोद्भवस्थितिः ।
१०२५ १०२६ १०२७
हंसोधर्मप्रवक्ता च सनकाद्युपदेशकृत् ॥ २३७ ॥
१०२८ १०२९
भक्तिसाधनवक्ता च योगसिद्धिप्रदायकः ।
१०३० १०३१
नानाविभूतिवक्ता च शुद्धधर्मावबोधकः ॥२३८॥
१०३२ १०३३
मार्गत्रयविभेदात्मा नानाशंकानिवारकः ।
१०३४ १०३५
भिक्षुगीताप्रवक्ता च शुद्धसांख्यप्रवर्त्तकः ॥ २३९ ॥
१०३६ १०३७
मनोगुणविशेषात्मा ज्ञापकोक्तपुरूरवाः ।
१०३८ १०३९
पूजाविधिप्रवक्ता च सर्वसिद्धान्तबोधकः ॥ २४० ॥
१०४० १०४१
लघुस्वमार्गवक्ता च स्वस्थानगतिबोधकः ।
१०४२ १०४३
यादवांगोपसंहर्त्ता सर्वाश्चर्यगतिक्रियः ॥ २४१ ॥

❁ अतः परं द्वादशस्कन्धीयनामानि ❁

१०४४
कालधर्मविभेदार्थवर्णनाशनतत्परः ।
१०४५ १०४६ १०४७
बुद्धो गुप्तार्थवक्ता च नानाशास्त्रविधायकः ॥२४२॥

१०४८
नष्टधर्ममनुष्यादिलक्षणज्ञापनोत्सुकः ।
१०४९ १०५० १०५१
आश्चर्यैकगतिज्ञाता कल्किः कलिमलापहः ॥२४३॥
१०५२ १०५३
शास्त्रवैराग्यसम्बोधो नानाप्रलयबोधकः ।
१०५४
विशेषतः शुकव्याजपरीक्षिज्ज्ञानबोधकः ॥२४४॥
१०५५ १०५६
शुकेष्टगतिरूपात्मा परीक्षिद्देहमोक्षदः ।
१०५७ १०५८ १०५९ १०६०
शब्दरूपो नादरूपो वेदरूपो विभेदनः ॥२४५॥
१०६१ १०६२ १०६३
व्यासः शाखाप्रवक्ता च पुराणार्थप्रवर्तकः ।
१०६४ १०६५
मार्कण्डेयप्रसन्नात्मा वटपत्रपुटेशयः ॥ २४६ ॥
१०६६
मायाव्याप्तमहामोहदुःखशान्तिप्रवर्तकः ।
१०६७ १०६८ १०६९
महादेवस्वरूपश्च भक्तिदाता कृपानिधिः ॥ २४७ ॥
१०७० १०७१ १०७२ १०७३
आदित्यान्तर्गतः कालो द्वादशात्मा सुपूजितः ।
१०७४ १०७५
श्रीभागवतरूपश्चसर्वार्थफलदायकः ॥ २४८ ॥

इतीदंकीर्तनीयस्य हरेर्नामसहस्रकम् ।
पञ्चसप्ततिविस्तीर्णं पुराणान्तरभाषितम् ॥ २४९ ॥

य एतत्प्रातरुत्थाय श्रद्धावान् सुसमाहितः ।
जपेदर्थाहितमतिः स गोविन्दपदं व्रजेत् ॥ २५० ॥
॥सर्वधर्मविनिर्मुक्तः सर्वसाधनवर्जितः ।
एतद्धारणमात्रेण कृष्णस्य पदवीं व्रजेत् ॥ २५१ ॥
हर्यावेशितचित्तेन श्रीभागवतसागरात् ।
समुद्धृतानि नामानि चिन्तामणिनिभानि हि ॥२५२॥
कण्ठस्थितान्यर्थदीप्त्या बधन्तेऽज्ञानजं तमः ।
भक्तिं श्रीकृष्णदेवस्य साधयन्तिविनिश्चितम् ॥२५३॥
किं बहूक्तेन भगवान् नामभिः स्तुतषड्गुणः ।
आत्मभावं नयत्याशु भक्तिं च कुरुते दृढाम् ॥२५४।
यः कृष्णभक्तिमिह वाञ्छति, साधनौघै-
र्नामानि भासुरयशांसि जपेत्स नित्यम् ।
तं वै हरिः स्वपुरुषं कुरुतेतिशीघ्रमात्मार्पणम्-
समधिगच्छति भावतुष्टः ॥ २५५ ॥
श्रीकृष्णकृष्णसख वृष्णिवृषावनिध्रुग्-
राजन्यवंशदहनानपवर्गवीर्य ।
गोविन्द गोपवनिताव्रजभृत्यगीततीर्थ-
श्रवः श्रवणमङ्गल पाहि भृत्यान् ॥ २५६ ॥

इति श्रीभागवतसारसमुच्चये वैश्वानरोक्तं पुरुषोत्तमसहस्रनाम
स्तोत्रम् सम्पूर्णम् शुभमस्तु ।

आवश्यक—

श्री वल्लभाचार्य जी के ज्येष्ठ पुत्र श्री गोपीनाथजी का ऐसा नियम था कि सम्पूर्ण श्रीमद्भागवत का पाठ करने के पश्चात् प्रसाद लेते थे जिससे उनकी माता आचार्यपत्नी को श्रम होता था। आचार्य ने इस असुविधा के हटाने को श्रीभागवत पीयूष समुद्र का मन्थन कर 'पुरुषोत्तम सहस्र नाम' प्रकट किया। 'मिसरी के साथ माखन भी होना चाहिये, इस लिये यह भी प्रकाशित किया जाता है।

— — —

पं० पुरुषोत्तमदास शर्मा के—

हरीहर इलैक्ट्रिक मशीन प्रेस मथुरा में,

पं० सरवनलाल द्वारा मुद्रित ।

श्री १०८ श्रीद्वारकेश लालजी महाराज

मथुरा (पोरबन्दर)

की

❋ शुभ–सम्मति ❋

श्रीयुत व्याकरणाचार्य शुद्धाद्वैत लब्धवर्ण शास्त्री श्री सबल-किशोर जी द्वारा लिखित 'श्री मिसरी भागवत' का निरीक्षण किया। यह पुस्तिका संक्षेप में सम्पूर्ण श्रीमद्भागवत के विषयों से परिचित करा देने के कारण अत्यन्त उपयुक्त है। मैं रसेश श्री पूर्णपुरुषोत्तम श्री यशोदोत्सङ्ग लालित प्रभु एवं श्री वल्लभाचार्य चरणों से प्रार्थना करता हूँ कि इन शास्त्री जी को चिरञ्जीवी बनावें और साम्प्रदायिक ग्रन्थ सेवा का बल देने की कृपा करें, जिससे वैष्णव समाजोपयोगी कार्यों को निरन्तर करते रहें। शुभम्।

———